RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष-11, अंक-10, हिन्दी (मासिक), नवंबर 2024, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

राष्ट्रपति ने किया वैश्विक शिखर सम्मेलन का शुभारंभ, राजस्थान के राज्यपाल भी रहे मौजूद

चार दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित

आचरण और विचारों में शुद्धता लाना ही अध्यात्म है : राष्ट्रपति

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में चार दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें भारत सहित विश्व के 15 से अधिक देशों की पांच हजार से अधिक जानीं-मानीं हस्तियों ने भाग लिया। कला, धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, राजनीति, विज्ञान, चिकित्सा और शिक्षा सहित अन्य क्षेत्रों के विद्वानों ने आध्यात्मिकता द्वारा स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज विषय पर अलग-अलग सत्रों में विचार रखे। सम्मेलन में सभी ने चिंतन-मंथन कर निष्कर्ष निकाला कि यदि समाज, राष्ट्र और विश्व को स्वस्थ, सुखी, संपन्न बनाना है, मानसिक-शारीरिक-आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ बनाना है तो एकमात्र उपाय अध्यात्म ही है। जीवन में आध्यात्मिकता के समावेश के बिना मानव जाति का कल्याण संभव नहीं है। अध्यात्म से ही विश्व शांति आएगी। अध्यात्म भारत की धरोहर और संस्कृति है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने वैश्विक शिखर सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए अपने भाषण में विश्व शांति, अध्यात्म, ग्लोबल वार्मिंग पर बात की। साथ ही केंद्र सरकार की योजनाएं स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन और आयुष्मान भारत योजना की सराहना भी की। इसके पूर्व मान सरोवर परिसर में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कर 140 करोड़ देशवासियों से पौधारोपण का आह्वान किया।

राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि आज विश्व के अनेकों हिस्सों में अशांति का वातावरण व्याप्त है। मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ऐसे समय में शांति और एकता की महत्वता और अधिक बढ़ रही है। शांति केवल बाहर ही नहीं, बल्कि हमारे मन की गहराई में स्थित होती है। जब हम शांत होते हैं, तभी हम दूसरों के प्रति सहानुभूति और प्रेम का भाव रख सकते हैं। इसलिए मन, वचन, कर्म सबको स्वच्छ रखना होगा। आध्यात्मिक मूल्यों का तिरस्कार करके केवल भौतिक प्रवृत्ति का मार्ग अपनाना अंततः विनाशकारी सिद्ध होता है।

कर्मों का सुधार कर ही बेहतर इंसान बन सकता है : राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि आध्यात्मिकता का मतलब धार्मिक होना या सांसारिक कार्य का त्याग करना नहीं है। आध्यात्मिकता का अर्थ है अपने भीतर की शक्ति को पहचानकर अपने आचरण और विचारों में शुद्धता लाना है। कर्मों का त्याग करके नहीं कर्मों का सुधार कर ही बेहतर इंसान बन सकता है। विचारों और कर्मों में शुद्धता जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन और शांति लाने का मार्ग है।

स्वच्छ और स्वस्थ शरीर में ही पवित्र अंतःकरण का वास होता है। स्वच्छता केवल बाहरी वातावरण में नहीं बल्कि हमारे विचारों और कर्मों में भी होना चाहिए। हम परमात्मा की संतान हैं। परमात्मा की तरह हम भी विचित्र हैं। आज सुबह मान सरोवर में ब्रह्ममुहूर्त में उठी और वहां बाबा के कमरे में परमात्मा शिव बाबा का ध्यान करने का मौका मिला। हम सभी के लिए जीवन में ध्यान बहुत जरूरी है। ध्यान से ही खुद को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं।

04 दिन चला वैश्विक शिखर सम्मेलन

10 सत्र आयोजित किए गए

60 से अधिक विद्वानों ने रखे अपने विचार

05 हजार देश-विदेश से आए लोगों ने लिया भाग

तीन श्रेणियों उद्योग, समाजसेवा और मीडिया की शख्सियतों को किया सम्मानित

अध्यात्म से जुड़ाव हमें विश्व को देखने का अलग दृष्टिकोण देता है

राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि भारत प्राचीन समय से ही आध्यात्मिक क्षेत्र में विश्व समुदाय का मार्गदर्शन करता रहा है। मेरी कामना है कि ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान भारत की इस पहचान को और मजबूत बनाने का काम करें। अध्यात्म हमें अपने आप को जानने और अंतर्मन को पहचानने का अवसर देता है। अध्यात्म से जुड़ाव हमें समाज और विश्व को देखने का एक अलग सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण हमें प्राणियों के प्रति दया और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का भाव उत्पन्न करता है। आध्यात्मिकता न केवल व्यक्तिगत विकास का साधन है, बल्कि समाज में सकारात्मकता लाने का मार्ग भी है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसे आध्यात्मिक संस्थानों की योग और आध्यात्मिक शिक्षा आंतरिक शांति का अनुभव कराती है। यह शांति न केवल हमारे भीतर, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता रखती है।

राजस्थान के राज्यपाल ने कहा...

राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने कहा कि आध्यात्मिकता व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति में व्यक्तिव विकास, जीवन की स्वच्छता, विचारों की स्वच्छता पर जोर दिया गया है। भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् पर आधारित है। सभी सुखी रहें, सभी निरोग रहें। यह सम्मेलन समाज में व्याप्त कुरुतियों को दूर करने, अध्यात्म का संदेश देने में बहुत महत्वपूर्ण साबित होगा।

- राष्ट्रपति ने विश्व शांति, अध्यात्म, ग्लोबल वार्मिंग, स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन और पर्यावरण पर की बात
- मुर्मु ने देशवासियों से एक पेड़ मां के नाम लगाने का किया आह्वान

राष्ट्रपति ने इन विषयों पर भी रखे विचार-

- विश्व ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण की समस्याओं से जूझ रहा है। इससे बचाने के प्रयास करना चाहिए। मनुष्यों को यह समझना चाहिए कि वह इस धरती का स्वामी नहीं है। बल्कि पृथ्वी के संरक्षण के लिए जिम्मेदार है। हम ट्रस्टी हैं, हम ऑनर नहीं हैं।
- भारत सरकार द्वारा जीवामृत और प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्राकृतिक खेती से स्वच्छ अन्न, स्वस्छ अन्न से स्वच्छ मन की कड़ी बनती है। जैसे ब्रह्माकुमार भाई-बहन यौगिक खेती करने के लिए प्रोत्साहित करने हैं और खुद भी यौगिक खेती करते हैं। कहा जाता है कि जैसा अन्न, वैसा मन।
- स्वच्छ भारत मिशन के हाल ही में दस वर्ष पूरे हुए हैं। इस मिशन ने समाज में स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढ़ाई है। जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर में स्वच्छ जल मुहैया कराने का संकल्प लिया गया है। 78 फीसदी से अधिक ग्रामीण घरों में नल से स्वच्छ जल पहुंचाया जाता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्वच्छ जल न केवल स्वच्छता बल्कि संपूर्ण शरीर के लिए आवश्यक है।

वैश्विक शिखर सम्मेलन- पहला दिन(शाम का सत्र)

स्वस्थ समाज की परिकल्पना आत्म शुद्धि और अध्यात्म के बिना नहीं हो सकती है : केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उईके

सामाजिक परिवर्तन के लिए आध्यात्मिक नेतृत्व विषय पर शाम का सत्र आयोजित

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन के प्लेनरी सेशन प्रथम में राजनीति, मीडिया, इंडस्ट्रीज और अध्यात्म जगत की शख्सियतों ने भाग लिया। सामाजिक परिवर्तन के लिए आध्यात्मिक नेतृत्व विषय पर मुख्य अतिथि भारत सरकार के जनजातीय मामलों के केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके ने कहा कि अध्यात्म का अर्थ है स्वम की खोज। यदि हम सामाजिक परिवर्तन करना चाहते हैं तो सामाजिक नेतृत्व करने वालों को आध्यात्मिक वेत्ता होना चाहिए। जब नेतृत्व कर्ता आध्यात्मिक होगा तो कार्य भी सामाजिक परिवर्तन होगा। ये परंपरा आदि काल से हमारे देश में है। भारत संतों, महापुरुषों की भूमि है। आध्यात्मिक चेतना के माध्यम से राजा राज्यों का कुशल संचालन करते थे। स्वस्थ समाज की परिकल्पना आत्म शुद्धि के बिना नहीं हो सकती है। जितने भी बदलाव हुए हैं ये विचारकों, सिद्धों ने किए हैं। स्वयं की साधना के बिना सूक्ष्म परिवर्तन नहीं हो सकता है। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना और कर्मों में होना बड़ा अंतर है। जब-जब देश में विभीषिकाएं आई हैं तब-तब बहनों और नारी शक्ति ने नेतृत्व किया है। ब्रह्माकुमारी बहनें निश्चित रूप से एक दिन समाज में परिवर्तन लाएंगी। ये बहनें सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए कार्य कर रही हैं इनकी तप, त्याग, साधना को नमन करता हूं।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार

ऑस्ट्रेलिया में ब्रह्माकुमारीज़ के निदेशक चार्ली हॉग, मैंगलोर के सौरभ संगीत नृत्य कला परिषद के श्रीविद्या मुरलीधर, ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी स्वदेश दीदी, नई दिल्ली पांडव भवन की निदेशिका राजयोगिनी बीके पुष्पा दीदी, मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सुमन दीदी ने भी अपने आध्यात्मिक अनुभव सांझा किए। स्वागत भाषण ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. बीके प्रताप मिड्ढा ने दिया। स्वागत नृत्य पुणे से आए नृत्यर्ष कथक नृत्य संस्थान के कलाकारों ने पेश किया। संचालन जयपुर की बीके चंद्रकला दीदी ने किया।

गुजरात बड़ोदरा की राजमाता शुभांगिनी राजे गायकवाड़ ने कहा कि यहां आकर बहुत शांति और खुशी का अनुभव कर रही हूं। यहां का आध्यात्मिक वातावरण अद्भुत है। आज हम देख रहे हैं समाज में एक नहीं अनेक युद्ध चल रहे हैं। स्वामी विवेकानंद ने अध्यात्म का संदेश विदेश में दिया। उसके बाद विश्व में लोगों का भारत को देखने का नजरिया बदल गया। आध्यात्मिक ज्ञान की आज हर किसी को जरूरत है।

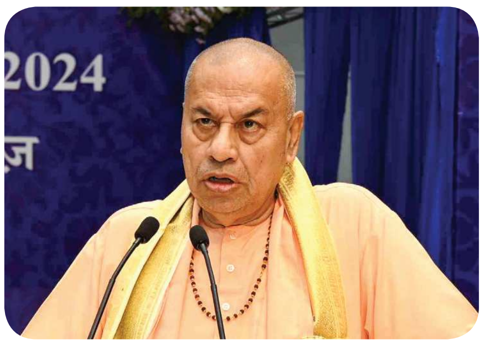

रामकृष्ण मिशन नई दिल्ली के सचिव स्वामी सर्वलोकानंद ने कहा कि मैंने यहां देखा कि सबकुछ सुव्यवस्थित ढंग से हो रहा है। इसका एकमात्र कारण है आध्यात्मिकता। ब्रह्माकुमारीज़ संगठन पूरे विश्व में अध्यात्म का संदेश दे रहा है। यदि हम समाज में बदलाव लाना चाहते हैं तो पहले स्वयं में बदलाव लाना होगा। आतंरिक परिवर्तन ही आध्यात्मिकता है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं- अच्छा बनो, अच्छा कार्य करो। यही आध्यात्मिकता है। हमें अच्छा बनना है। हमें अपने भीतर परिवर्तन लाना है।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शरणप्पा वैजीनाथ हाल्से ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान भारत को विश्वगुरु बनाने की सेवा में जुटा है। साथ ही संस्थान द्वारा मूल्य शिक्षा को लेकर कई प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं। मैं यहां अध्यात्म की शिक्षा लेने आया हूं। यहां आकर बहुत शांति और आनंद का अनुभव कर रहा हूं। संस्थान की सेवाएं मानव कल्याण के लिए हैं। इससे ही परिवर्तन आएगा।

ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके स्वदेश दीदी ने कहा कि जब तक हम आत्मिक ज्ञान को जीवन में शिरोधार्य नहीं करेंगे हमारा जीवन नहीं बदलेगा। आत्मा-परमात्मा का ज्ञान ही जीवन में परिवर्तन लाता है। समय की मांग है कि हम अपने जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान को शामिल करें। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान लोगों के जीवन को सुख-शांतिमय बनाने, जीवन जीने की कला सिखाने के लिए पिछले 88 वर्षों से विश्व कल्याण में अपनी सेवाएं दे रहा है। इसी को लेकर यह वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया है।

ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़कर हमें जीवन का स्पष्ट लक्ष्य मिला। जीवन में क्या करना है इसका ज्ञान हुआ। आज जरूरत है कि हम दैवी गुणों को धारण करें। मैंने विश्व के 50-60 देशों में अध्यात्म का संदेश दिया और मुझे इससे जो आंतरिक खुशी होती है उसे बता नहीं सकती हूं। सभी भाई-बहन ज्यादा से ज्यादा लोगों को ईश्वरीय संदेश दें ताकि उनका जीवन बदल सके। परमात्मा का कर्तव्य है विश्व शांति की स्थापना।

ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया निदेशक राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि हम शरीर नहीं हैं एक ज्योति स्वरूप आत्मा हैं, यह हम सबने समझा है। ईश्वर एक है। भले हम अलग-अलग नाम, रूप से मानते हैं। हम सभी आत्माओं का ईश्वर एक है और सभी एक ही ईश्वर को याद करते हैं। सभी चाहते हैं कि हम अच्छा कार्य करें। कर्म करने के लिए हम सभी इस धरती पर आए हैं। ईश्वर ने हमें पांच तत्व दिए हैं। एक ही रास्ता है कि हमें अच्छा बनना होगा। हम अच्छा बनेंगे तो सब अच्छा हो जाएगा। राजयोग से जीवन जीने की कला आ जाती है।

वैश्विक शिखर सम्मेलनः दूसरा दिन (सुबह का सत्र)

ब्रह्माकुमारी पूरे विश्व में करोड़ों लोगों के जीवन में बदलाव लाने का कार्य कर रही हैः मुख्यमंत्री

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन वक्ताओं ने वसुधैव कुटुम्बकम् विषय पर चिंतन-मंथन किया। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि भारतीय जीवन दर्शन का सार है वसुधैव कुटुम्बकम्। आज पूरा विश्व विभिन्न युद्धों से घिरा हुआ है और लोग वास्तव में तृतीय विश्व युद्ध होने की आशंका भी व्यक्त कर रहे हैं। ऐसे समय में हमारी संस्कृति और सनातन परंपरा में कहा गया है अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश विश्व की शांति की लिए है। केवल एक शांति का उपदेश नहीं है बल्कि वर्तमान समय और परिवेश में एक अनिवार्यता है। जिसे आज हम समझ जाएं तो बहुत अच्छा है। यदि नहीं समझे तो कल अवश्य समझना पड़ेगा। भाईचारे का संदेश आज भी उतना ही प्रासांगिक है जितना कि पहले था। आज हम भागदौड़ की जिंदगी में सच्ची खुशी और आंतरिक शांति को भूल गए हैं। उत्तराखंड देश का पहला राज्य है जहां हमने सकल पर्यावरण उत्पाद (जीईपी) लागू किया है। इकोनॉमी और इकोलॉजी दोनों में कैसे संतुलन बना रहे।

आध्यात्मिक चिंतन से सकारात्मक बदलाव

सीएम धामी ने कहा कि जैसे नई टेक्नोलॉजी हमें भौतिक सुख प्रदान करती है, वैसे ही आध्यात्मिकता हमें आंतरिक सुख प्रदान करती है। साथ ही शरीर, मन और आत्मा में संतुलन बनाने का काम करती है। वर्तमान में ब्रह्माकुमारीज संस्था नैतिक मूल्यों से लोगों को पथ प्रदर्शित कर रही है। पूरे विश्व के अंदर करोड़ों लोगों के जीवन में बदलाव लाने का कार्य संस्थान द्वारा किया जा रहा है। आध्यात्मिक चिंतन से हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। इस बदलाव को मैंने अपने जीवन में स्वयं भी महसूस किया है। आध्यात्मिकता केवल जीवन की आवश्यकता नहीं है, बल्कि जीवन की अनिवार्यता है। ब्रह्माकुमारीज एक संस्थान ही नहीं है बल्कि यह कलियुग से सतयुग की स्थापना का एक महान कार्य है।

दिल्ली के जीबी पंत अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक प्रो. डॉ. मोहित गुप्ता ने कहा कि ढूंढ रहे दुनिया में कमियां, अपने मन को तांके कौन। दुनिया सुधरे, जग सुधरे, खुद को आज सुधारे कौन। परउपदेश कुशल बहुतेरे, खुद पर आज विचारे कौन। हम सुधरे जग सुधरेगा ये सीधी बात विचारे कौन। संसार का परिवर्तन, जीवन का परिवर्तन। वसुधैव कुटुम्बकम् यह केवल शब्दों का खेल नहीं है यह भावनाओं और संकल्पों के परिवर्तन की कहानी है।

15 वर्ष से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूंः धामी

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि भारत की भूमि से उपजा यह संस्थान विश्व के कोने-कोने में शांति और मानवता का संदेश देने का कार्य कर रहा है। अध्यात्म और मानवता के लिए कार्य कर रहा है। मैं आज यहां स्वच्छ और स्वस्थ समाज के निर्माण में आध्यात्मिकता की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने के लिए आया हूं। मैं आप सभी लोगों के बीच जिज्ञासु बनकर आया हूं। यहां आने के बाद अपने भीतर विशेष प्रकार की आंतरिक शांति की अनुभूति हो रही है। करीब 15 साल से ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रमों में जाता रहा हूं। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी जी से मुलाकात हुई, उनका आशीर्वाद मिला। खुद को बहुत धन्य महसूस कर रहा हूं।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, केंद्रीय रेल राज्यमंत्री बिट्टू और सांसद रवि किशन रहे मौजूद

अध्यात्म के अभाव में लोग दौड़े जा रहे हैंः सांसद

उप्र के गोरखपुर से सांसद व अभिनेता रवि किशन ने कहा कि मैं कलाकार हूं तो मुझे चेहरे पढ़ना आता है। यहां आकर बहुत शांति महसूस हो रही है। यहां हम शांति ढूंढने आए थे। जीवन में चलते-चलते रुक जाना यही लोग नहीं समझ पाते हैं। लोग निरंतर जैसे कुछ पाना चाहते हैं, दौड़ना चाहते हैं। हर क्षेत्र में लोग निरंतर भागे जा रहे हैं। अध्यात्म नहीं होने से लोग नशे की गिरफ्त में जा रहे हैं।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने विचार...

इस मौके पर संस्थान की ओर से केंद्रीय रेल राज्य खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू और उत्तराखंड के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट का विशेष रुप से सम्मान किया गया। वहीं एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के संस्थापक प्रो. चेतन सिंह सोलंकी को मानवता के संरक्षक पुरस्कार से नवाजा गया। संस्थान के उत्तराखंड में बीके मेहरचंद भाई ने राज्य में संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं की रिपोर्ट पेश की। सोनालैक पेंट्स के एमडी बीके राधे श्याम गर्ग ने स्वागत भाषण दिया। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई। राशि अग्रवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मैंगलोर से आए श्रीविद्या मुरलीधर सौरभ संगीत नृत्य कला परिषद के कलाकारों ने स्वागत नृत्य पेश किया। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। गोरखपुर से विधायक प्रदीप शुक्ल सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे। संचालन हैदराबाद की बीके अंजली बहन ने किया।

वैश्विक शिखर सम्मेलनः दूसरा दिन (शाम का सत्र)

अध्यात्म से जुड़ने पर हम समस्या के समाधान की तरफ बढ़ते हैं: राज्यपाल

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन शाम का सत्र क्लाइमेट चैंज विषय पर आयोजित किया गया। इसमें कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने कहा कि हमारे यहां प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए जल, वृक्षों और प्रकृति पूजन का प्रावधान है। हमारी प्राचीन परंपरा आज भी पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रासंगिक है। हम हमेशा से ही जल, थल, वायु के संरक्षण का काम करते रहे हैं। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए समग्र प्रयास की आवश्यकता है। हम संकल्प से सिद्धि तक पहुंचने का प्रयास करेंगे। ब्रह्माकुमारी संस्था अध्यात्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। हम अध्यात्म से जुड़ते हैं तो सारी समस्या हमारे ध्यान में आती है और हम समाधान की तरफ बढ़ते हैं। हम भी सुधरते हैं और दूसरों को भी सुधारने का प्रयास करते हैं। मैं आपका भी आह्वान करता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी दिशा में कार्य कर रहा है अध्यात्म से जुड़ें।

राज्यपाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था में साफ-सुथरे वातावरण के साथ मानसिक व आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखते हैं। मानसिक समस्याओं का समाधान आध्यात्मिकता में ही निहित है। सामाजिक समता व समरसता बनाने की आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान सेवा के माध्यम से कार्यशालाओं का आयोजन कर अध्यात्म से लोगों को समर्थ बनाने का कार्य कर रही है। चरित्र भी पर्यावरण संतुलन के लिए आवश्यक है। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा महान कार्य किया जा रहा है। यहां आकर हमें सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। मेरा ब्रह्माकुमारीज में तीसरा दौरा है। आप सब यहां से प्रेरणा लेकर जाएंगे ताकि पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

घर-घर में मेडिटेशन सेंटर खोलने की जरूरत

भारत सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के एडिशनल सेक्रेटरी सुधीर कुमार बरनवाल ने कहा कि हम भौतिक संसाधन, सुविधाएं बढ़ाने का तो ध्यान रखते हैं लेकिन कोई माइंड, मन को स्वस्थ रखने के बारे में ध्यान नहीं रखता है। आज घर-घर में मेडिटेशन सेंटर खोलने की जरूरत है। मैं खुद पिछले 15 साल से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। मैंने अपने जीवन में मेडिटेशन के अनेक फायदे महसूस किए हैं। डेनमार्क की निदेशिका सोंजा ओहल्सन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके श्रीनिधि भाई ने किया।

क्लाइमेट चेंज से निपटने के लिए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है

केंद्रीय राज्य जल शक्ति मंत्री राजभूषण चौधरी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के संकट से निपटने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। हमारी सरकार भी लगातार क्लाइमेट चेंज के दुष्प्रभाव से बचने का प्रयास कर रही है। एक पेड़ मां के नाम जैसे अभियान से हम क्लाइमेट चेंज के दुष्प्रभाव से बच सकते हैं। हम आध्यात्मिकता के मूल सिद्धांतों को अपनाकर जलवायु परिवर्तन की समस्या को सुलझा सकेंगे। जहां तक ब्रह्माकुमारी का संदर्भ है, इसकी स्थापना स्वयं ज्योतिर्बिंदु परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा की है।

ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि अतिधर्म की ग्लानि के इस समय परमात्मा अवतरित होकर हमें सत्य ज्ञान दे रहे हैं। राजयोग से आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से जुड़ता है। इससे परमात्म शक्तियां आत्मा में आ जाती हैं। जीवन में मूल्यों का समावेश हो जाता है। इस ज्ञान को सभी को समझने की जरुरत है।

ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव राजयोगी बीके निर्वैर भाई ने कहा कि आज विश्व किस दिशा में जा रहा है। यह विचारणीय है। ऐसे में संस्थान द्वारा आयोजित यह सम्मेलन अति महत्वपूर्ण हो गया है। इसके द्वारा विश्व को खुशी प्रदान करने और भय को दूर करने का संदेश मिला है। दुनिया को केवल अध्यात्म और परमात्म ज्ञान द्वारा ही बचाया जा सकता है।

ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने विश्वभर से आए मेहमानों का स्वागत किया। विशेष शख्सियतों को सम्मान से नवाजा। सम्मेलन के सफलतापूर्वक आयोजन पर कहा कि सभी के सहयोग से आयोजन बहुत गरिमापूर्ण और सफल रहा। आप सभी ने यहां जो ज्ञान लिया है उसे अपने जीवन में धारण करेंगे तो जीवन बदल जाएगा।

ब्रह्माकुमारीज़ की प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने कहा कि खुशी और शांति हमारा संस्कार है। जो भी कर्म करें वह खुश होकर करें न कि खुशी के लिए करें। खुशी आत्मा का मूल संस्कार, ओरिजनल नेचर है। जीवन में खुशी की संभाल पैसे से ज्यादा करने की जरुरत है। क्योंकि खुशनुमा जीवन ही सच्चा जीवन है। हम खुश तभी रह पाएंगे जब हमें सच्चा ज्ञान होगा, कब, कैसे, कितना और क्या सोचना है। सही सोच हो तो सही कर्म होते हैं। इसलिए सही सोचना भी एक कला और विधि है।

आस्ट्रेलिया में ब्रह्माकुमारीज़ के निदेशक चार्ली हॉग ने कहा कि आस्ट्रेलिया में तेजी से लोगों में आध्यात्म को लेकर जागरुकता आ रही है। लोग योग का महत्व समझ रहे हैं। भारत के प्रति लोगों की आशा भरी निगाहें हैं। भारत अध्यात्म का केंद्रबिंदु है। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से मेरा पूरा जीवन बदल गया। मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे यह सत्य परमात्म ज्ञान मिला। इससे बढ़कर कोई ज्ञान नहीं हो सकता है। अब ईश्वरीय सेवा में जीवन सफल कर रहा हूं।

ब्रह्माकुमारीज़ के माउंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर अकादमी की निदेशिका राजयोगिनी बीके प्रभा दीदी ने कहा कि वर्तमान में दुनिया जिस दौर से गुजर रही है, ऐसे में एकमात्र सहारा अध्यात्म ही है। जब तक हम खुद को नहीं बदलेंगे तब तक विश्व नहीं बदल सकता है। यहां पर यही सिखाया जाता है कि आप अपने अंदर परिवर्तन लाइए। अपने जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाइए। आपको देखकर दूसरे बदलेंगे। क्योंकि व्यक्ति ज्ञान से ज्यादा हमारे कर्मों को देखकर बदलता है और उस पर प्रभाव पड़ता है।

वैश्विक शिखर सम्मेलन (सुबह का सत्र) 6 अक्टूबर 2024

शुद्ध और पवित्र अन्न के बिना विचारों की शुद्धता नहीं हो सकती है: संत हुजूर कंवर

साहेब महाराज बोले- वेश बदल देने से कुछ नहीं होता, इंसान के कर्म पवित्र होने चाहिए

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन में रविवार को स्मृति, वृत्ति और कृति में पवित्रता की धारणा विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया। सुबह के सत्र में हरियाणा के संत राधा स्वामी सत्संग के प्रमुख परम संत हुजूर कंवर साहेब महाराज ने कहा कि राधास्वामी कोई अलग मत नहीं है। संत मत में जितने मजहब, धर्म, पंथ आते हैं उनमें से ही एक है। ये भी इंसान को बुराई से बचाते हुए अच्छे गुणों को अपनाते प्रभु के मार्ग पर ले जाने का एक सुगम रास्ता है। जब इंसान की सोच पवित्र, कर्म दिव्य हो जाते हैं तो वह इंसान नहीं रहता, देवतुल्य बन जाता है। सबसे जरूरी चीज है कि इंसान का खानपान शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। अन्न शुद्ध नहीं है तो विचारों की शुद्धता हो ही नहीं सकती है। हम जैसा अन्न खाते हैं, वैसा मन होता और वैसे ही विचार आते हैं। विचारों के आधार पर वैसे ही कर्म होते हैं। इसलिए संत-महात्मा जो अन्न ग्रहण करते हैं उसे प्रसाद बोलते हैं। वेश बदल देने से कुछ नहीं होता, इंसान के कर्म पवित्र होने चाहिए। मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न दें। सदा मीठे वचन बोलें।

उन्होंने कहा कि यदि अन्न चोरी, भ्रष्टाचार या गलत तरीके से लाया गया है तो उसके विचार अच्छे नहीं बन सकते हैं। इसलिए अपने संग का भी हमेशा ख्याल रखना चाहिए। महापुरुषों के संग से एक दिन हमारे जीवन में भी विचारों की पवित्रता आ जाती है। यहां आकर शांति और विशेष प्रकार का प्यार मिला जिसे पाकर हमें लगता है, जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुंच गए हैं। यहां जितने भी ब्रह्माकुमार भाई-बहिन मिले, उनकी वाणी व व्यवहार में दिव्यता और सत्यता झलकती है। यहां की दिव्य वातावरण आनंददायक और शांतिपूर्ण है।

यूएसए से आए पीटर कुमार बोले- मन के पर्यावरण को स्वच्छ रखें

यूएसए के लेप्स ग्रुप (ऑपरेशंस एंड सेल्स) के वाइस प्रेसिडेंट पीटर कुमार ने कहा कि यदि हमारी विचारों की ऊर्जा सकारात्मक होगी तो वह हमें आगे बढ़ाएगी। विचारों की एनर्जी नकारात्मक होगी तो वह नीचे गिराएगी। हम सोच से ही पापात्मा, पुण्यात्मा, महात्मा और देवात्मा बनते हैं। सोच के आधार पर हमारे कर्म होते हैं और कर्म के आधार पर हमारे स्वभाव, संस्कार बनते हैं और वैसा ही हमारा व्यक्तित्व बनता है। यदि मन और सोच पवित्र रखेंगे तो जीवन महान बन जाता है। जैसे हम घर को स्वच्छ रखते हैं, वैसे ही मन के पर्यावरण को स्वच्छ रखें।

वक्ताओं के विचार

- भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल राजस्थान एचसी राजदीपक रस्तोगी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ वह संस्था है जिसमें अपनत्व की भावना कूट-कूट कर भरी है। आप लोगों को दिल से अपनाते हैं।
- तेलंगाना राज्य योजना बोर्ड उपाध्यक्ष श्री जी चिन्ना रेड्डी ने कहा कि आज आध्यात्मिक ज्ञान की हर एक व्यक्ति को आवश्यकता है। अध्यात्म से ही हमारी सोच पवित्र बनती है।

ये भी रहे मौजूद

- वैज्ञानिक, इंजीनियर और आर्किटेक्ट विंग के अध्यक्ष राजयोगी बीके मोहन सिंघल, जयपुर सबजोन की निदेशिका बीके सुषमा दीदी, नई दिल्ली हरीनगर की निदेशिका राजयोगिनी बीके शुक्ला दीदी, वैल्यू एजुकेशन प्रोग्राम की सहायक निदेशक बीके लीना बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन शिक्षा प्रभाग की बीके सुप्रिया बहन ने किया।

वैश्विक शिखर सम्मेलनः समापन सत्र

देश का समुचित विकास करना है तो लोगों को सनातन संस्कृति से जोड़ना पड़ेगाः उप मुख्यमंत्री

विज्ञान और आध्यात्मिकता के मेल से होगा सतत विकास विषय पर समापन सत्र आयोजित

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

चार दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन के समापन सत्र में मप्र के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला ने कहा कि यदि देश का समुचित विकास करना है तो लोगों को सनातन संस्कृति से जोड़ना पड़ेगा। हमें समाज और देश के लिए समर्पित लोगों की फौज खड़ी करनी पड़ेगी। जब जाकर हम उस विकास को संभाल पाएंगे। तब यह सस्टेनेबल डवलपमेंट कहलाएगा। इसके लिए हमें मनुष्य के अंदर की आध्यात्मिक शक्ति को जागृत करना पड़ेगा। उसे सनातन धर्म से जोड़ना पड़ेगा। हमारी जो सांस्कृतिक विरासत और सनातन है उसे पुनर्जीवित-पुनर्स्थापित करने की लहर पूरे देश में चल रही है। यह भी हमारे देश के लिए अच्छा संकेत है। आज लोग सनातन को समझने लगे हैं। सनातन की ओर जुड़ने लगे हैं। सनातन और अध्यात्म ही हमारी आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है। जब आत्मा, परमात्मा से जुड़ती है तो हमारे अंदर मानवीय गुण विकसित होते हैं। हम वसुधैव कुटुम्बकम् के मंत्र पर चलते हैं। हमें सभी के कल्याण के बारे में सोचना है। ये पवित्र भाव, ईश्वर भाव हैं जो मानव जाति के कल्याण के लिए हैं।

उन्होंने कहा कि आज अयोध्या में भगवान राम का मंदिर, उसमें भी विवाद है कि बनना चाहिए या नहीं बनना चाहिए। क्यों नहीं बनना चाहिए। जहां भगवान राम का जन्म हुआ है, वहां मंदिर नहीं बनेगा तो क्या मक्का और मदीना में बनेगा। लेकिन इसे लेकर भी विवाद हम लोगों ने अपने देश में देखा है। क्या ये गलत दिशा में ले जाने वाले लोगों का षड़यंत्र नहीं था।

युद्ध नहीं रुके तो आने वाली पीढ़ी हमें दोष देगी

उपमुख्यमंत्री शुक्ला ने कहा कि रुस और यूक्रेन की लड़ाई चल रही है। मिसाइलें दागी जा रही हैं। हजारों की संख्या में लोग मौत की नींद में सुलाए जा रहे हैं। मानवता के सामने गंभीर खतरा पैदा हो गया है। इस खतरे का सामना कैसे होगा, यह यक्श प्रश्न है। ऐसे समय में ब्रह्माकुमारीज़ ने अपनी सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी को समझते हुए ग्लोबल समिट का आयोजन किया है। यह प्रासांगिक है, समय की मांग है। यदि दुनिया इस बारे में विचार नहीं करेगी तो आने वाली पीढ़ी इसका दोष भुगतेगी और इसका दोष हम लोगों पर आएगा कि समाज को जागृत नहीं किया। हमने शांति का पाठ नहीं पढ़ाया। यदि विज्ञान और अध्यात्म का सदुपयोग होगा तो मानव के लिए जीवन में सभी प्रकार की सुख-शांति और खुशी मिलेगी। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत बहुत तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है।

ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान देश को खुशहाली के लिए हैं

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि 1937 से लेकर आज तक ब्रह्माकुमारीज़ संगठन लगातार आगे बढ़ता जा रहा है। रास्ते से भटके हुए लोगों को रास्ते पर लाने का काम ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संगठन कर रहे हैं। लोग आपको आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। अध्यात्म मनुष्य की आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है। यदि आत्मा का शुद्धिकरण नहीं होगा तो न मनुष्य स्वयं सही रास्ते पर चलेगा, न समाज को सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित कर सकेगा। ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान देश को खुशहाली के लिए हैं। आज मैं सुबह 3.30 बजे उठ गया था और 45 मिनट मेडिटेशन किया। मैं प्रयास करता हूं कि जब गाड़ी में चलता हूं तो आंख बंद करके मेडिटेशन कर लूं। शरीर की बहुत व्याधियां भी मेडिटेशन से दूर हो जाती हैं।

विश्व को आज शांति की जरूरत है: राष्ट्रपति

राष्ट्रपति ने मान सरोवर परिसर में ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ पदाधिकारियों से की स्नेह मुलाकात, अपने अनुभव सांझा किए

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

अपने दो दिवसीय दौरे पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन के मान सरोवर पहुंचीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने रात्रि में संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों से स्नेह मुलाकात की। इस दौरान अनौपचारिक चर्चा में राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि वर्तमान में जो विश्व के हालात चल रहे हैं ऐसे में शांति की बहुत जरूरत है। शांति के माध्यम से हर समस्या का हल निकाला जा सकता है। साथ ही वर्तमान परिस्थितियों में हर इंसान के लिए आध्यात्मिकता जरूरी है। आध्यात्मिक ज्ञान हमें जीवन में आने वाली कठिन परिस्थितियों में सबल प्रदान करता है और कमजोर नहीं पड़ने देता है। अध्यात्म तो हमारी विरासत है। अध्यात्म में जीवन की तमाम समस्याओं का समाधान है। ब्रह्माकुमार भाई-बहनें समाज को स्वच्छ-स्वस्थ और विश्व शांति का प्रयास कर रहे हैं। ये प्रयास 1937 से जारी है। मुझे लगता है एक दिन जरूर विश्व का परिवर्तन होगा। आप चट्टान की तरह हो। विश्व को शांति लाने, परिवर्तन लाने में आपका प्रयास जरूर सफल होगा। जब हम दूसरों की परिस्थिति में खुद को रखकर देखेंगे, तभी सही राय बन पाएगी। इस दौरान अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी और राजयोगिनी जयंती दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी, महासचिव बीके बृजमोहन भाई, कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई, मीडिया निदेशक बीके करुणा भाई सहित अन्य वरिष्ठ सदस्य मौजूद रहे।

राष्ट्रपति ने देशवासियों से किया पौधारोपण का आह्वान

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मान सरोवर परिसर में सुबह रुद्राक्ष का पौध रोपकर देशवासियों को एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण करने का संदेश दिया। उन्होंने सम्मेलन में लोगों से आह्वान किया कि प्रत्येक देशवासी अपने जन्मोत्सव पर साल में कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाएं। इससे हरियाली बढ़ेगी और पर्यावरण भी स्वस्थ और स्वच्छ होगा।

ब्रह्माकुमारीज़ ज्वैल ऑफ इंडिया अवार्ड

अपनी लगन और हिम्मत से उद्योग के क्षेत्र में नवाचार कर देश-दुनिया में नाम रोशन करने वाले व्यापारियों, उद्यमियों को इस श्रेणी के तहत पुरस्कृत किया गया। इसका मकसद उद्यमिता के प्रति बढ़ावा देना है।

ज्वैल आफ भारत पुरस्कार से नवाजा

डाइकिन एयरकंडीशनिंग इंडिया प्रा. लिमिटेड के सीएमडी कंवलजीत जावा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है। उद्योग के छेत्र में उल्लेखनीय कार्य पर आपको संस्थान की ओर से ज्वैल आफ भारत पुरस्कार से नवाजा गया।

सम्मान से सराहीं सामाजिक प्रतिभाएं

मीडिया, व्यापार और सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य पर तीन श्रेणियों में किया सम्मानित

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी तीन श्रेणियों में दिग्गज हस्तियों को सम्मानित किया गया। संस्थान की ओर से अलग-अलग क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रहे लोगों को राष्ट्र चेतना पुरस्कार, मानव के संरक्षक पुरस्कार और ज्वेल ऑफ इंडिया पुरस्कार से शील्ड, प्रशस्ति पत्र और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

ब्रह्माकुमारीज़ राष्ट्र चेतना पुरस्कार

पत्रकारिता के क्षेत्र में उच्च आदर्शों, देशप्रेम की भावना, समाज कल्याण, सत्य, साहस के साथ पत्रकारिता कर देशभर में नाम कमाने वाले वरिष्ठ पत्रकारों को इस श्रेणी में पुरस्कृत किया जाता है।

ब्रह्माकुमारीज़ मानवता के संरक्षक पुरस्कार

इस श्रेणी के तहत ऐसे लोगों को पुरस्कृत किया जाता है जो दुनिया में एकता, शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहे हैं। जिन्होंने क्षेत्रीय संघर्षों को रोकने में अपना सराहनीय योगदान दिया है।

दिल्ली के भारत एक्सप्रेस न्यूज के चेयरमैन व एडिटर उपेंद्र राय को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि देश में धर्म और अध्यात्म को मिलाकर जोड़ने की कोशिश की गई। धर्म अनेक है सभी धर्मों ने परमात्मा तक पहुंचने के रास्ते बताए हैं। अध्यात्म धर्म से ऊपर है।

नोएडा के जी मीडिया के प्रबंध संपादक राहुल सिन्हा को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ जो योग का संदेश लेकर चल रही है, वह आज के तनावपूर्ण माहौल में बहुत जरुरी है। संस्था द्वारा नशामुक्ति अभियान चलाया जा रहा है वह एक तरह से यज्ञ है।

प्रसिद्ध मेडिकल न्यूट्रोलॉजिस्ट डॉ. बिस्वरुप रॉय चौधरी को मानवता के संरक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि यदि हमें स्वस्थ रहना है तो प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाना होगा। भोजन के पहले सलाद लें। सुबह 8 बजे से पहले कुछ न खाएं और शाम 6 बजे के बाद कुछ न खाएं।

एबीपी न्यूज के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट (न्यूज़ एंड प्रोडक्टर) संत प्रसाद राय को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान अध्यात्म के द्वारा विश्व बदलाव के लिए समर्पित रुप से अपनी सेवाएं दे रही है जो सराहनीय है।

जयपुर के दैनिक भास्कर के राज्य संपादक मुकेश माथुर को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि आज नकारात्मकता को जीया जा रहा है। समाज जिस दिशा में बढ़ रहा है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ का यह मंच, कैसे बड़ा बदलाव ला सकता है, यह सब लोगों को नजर आता है।

एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के संस्थापक प्रो. चेतन सिंह सोलंकी को मानवता के संरक्षक पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि मेरा प्रयास रहता है कि ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा की बचत करुं। इसलिए अपने घर में न फ्रीज है और न ही एसी लगवाया है। मैं अपने कपड़ों पर प्रेस भी नहीं करता हूं।

ओडिशा के प्रतिदिन टीवी एवं न्यूज़ पेपर के निदेशक सुधीर कुमार पंडा को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि मेरे लिए यह गर्व की बात है कि आज यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। संस्था में आकर बहुत ही शांति की अनुभूति हुई। आपकी सेवा और त्याग अनुकरणीय है।

नोएडा से टाइम्स नाऊ नवभारत के कार्यकारी संपादक सुशांत सिन्हा को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि यहां आकर मुझे लगा कि पहले हमें अध्यात्म की पाठशाला में लौटना चाहिए। अध्यात्म शिक्षा पद्धति का हिस्सा होना चाहिए। जब जीवन में धारण करेंगे तो बदलाव आएगा।

स्फेरुले संस्था की संस्थापक डॉ. गीता बोरा को भी मानवता के संरक्षक पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि मानवता के कल्याण में ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाएं की जितनी सराहना की जाए कम है। संस्था विश्वभर में लोगों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। अध्यात्म समय की मांग है।

कर्ली टेल्स की सीईओ कामिया जानी वर्मा राष्ट्र चेतना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि भारत के कल्चर के बारे में लोगों को बताती हूं। जब भी मैं काम के दौरान प्रेशर फील करती हूं तो स्प्रीचुअलिटी से मदद मिलती है। जब भी दबाव में होती हूं तो ब्रह्माकुमारीज़ के वीडियो देखती हूं।

नोएडा के एबीपी न्यूज के पॉलीटिकल एडिटर अभिषेक उपाध्याय को राष्ट्र चेतना पुरस्कार से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाएं सराहनीय हैं। आज यह पुरस्कार पाकर बेहद खुशी और गर्व का अनुभव कर रहा हूं। अध्यात्म आज सभी के लिए जरुरी है।

प्रख्यात भारतीय कंप्यूटर वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् पद्मश्री डॉ. विजय पी. भाटकर को ज्वैल ऑफ भारत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में आकर बहुत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। यहां का साफ-स्वच्छ और आध्यात्मिक वातावरण अनुकरणीय है।

निश्छल 'प्रेम' के निशान छोड़ गए निर्वैर जी

राष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष, प्रधानमंत्री, राज्यपाल और मुख्यमंत्रियों ने दुख जताते हुए शोक संवेदनाएं व्यक्त की

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

अपने विराट हृदय, दयालुता, समर्पण भाव और त्याग-तपस्या से राजयोगी बीके निर्वैर भाई (86) निश्छल प्रेम के वह निशान छोड़ गए जो सदा लाखों लोगों की स्मृति में प्रेरणा बनकर मार्गदर्शन करते रहेंगे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के महासचिव राजयोगी बीके निर्वैर का 19 सितंबर को रात्रि 11.30 बजे अहमदाबाद के अपोलो हॉस्पिटल में देवलोकगमन हो गया था। 20 सितंबर को उनके पार्थिव शरीर को मुख्यालय शांतिवन लाया गया, जहां कॉन्फ्रेंस हाल में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। 21 सितंबर को माउंट आबू स्थित सभी परिसरों में उनकी बैकुंठी यात्रा निकाली गई। 22 सितंबर को दोपहर 12 बजे गार्ड ऑफ आर्नर के सम्मान के साथ पार्थिक शरीर को हजारों लोगों की मौजूदगी में मुखाग्नि दी गई। एक तपस्वी के महाप्रयाण से हर आंख नम थी। आपने चिकित्सा, शिक्षा सहित समाजसेवा के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय कार्य किए।

राजयोगी बीके निर्वैर भाई के देवलोकगमन पर राष्ट्रपति द्रौपद्री मुर्मु, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री व भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्ढा, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, पूर्व सीएम वसुन्धरा राजे सिंधिया, महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन, पूर्व सीएम अशोक गहलोत के सलाहकार रहे पूर्व विधायक संयम लोढ़ा ने शोक संदेश भेजकर संवेदना व्यक्त की है। देश-विदेश से अनेक गणमान्य लोगों ने शोक जताते हुए संवेदनाएं व्यक्त की।

86 वर्षीय ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव राजयोगी निर्वैर भाई का देवलोकगमन, देश-विदेश से पहुंचे हजारों लोगों ने नम आंखों से दी अंतिम विदाई

सुरक्षा गार्डों ने सम्मान में सलामी देकर विदाई दी

अंतिम यात्रा के पूर्व कॉन्फ्रेंस हाल के पोर्च में उनके पार्थिव शरीर को शांतिवन के सभी गार्ड ने कर्नल बीके सती के नेतृत्व में सलामी देकर विदाई दी। ट्रामा सेंटर पर पूरे स्टाफ, भाजपा गिरवर मंडल ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली अर्पित की। दोपहर 12 बजे आबू रोड मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार किया गया। मुक्ति वाहन को 30 मोटरसाईकिल सवार भाई स्काट कर रहे थे। तलहटी तिराहे पर टैक्सी यूनियन के लोगों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

मुक्तिधाम में इन्होंने भी दी श्रद्धांजली

मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार के पूर्व आबू-पिण्डवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि राजयोगी निर्वैर भाई का जीवन आदर्श था। उनके सेवाकार्यों को सदा याद रखा जाएगा। आबू रोड-रेवदर विधायक मोतीराम कोली ने कहा कि आपने अपने संस्थान के साथ सामाजिक क्षेत्र, खासकर चिकित्सा के क्षेत्र में जन कल्याण के कार्य किए हैं जो सदा हमारी यादों में रहेंगे। इस मौके पर उदयपुर जिला कलेक्टर अरविन्द पोसवाल, सीएमएचओ डॉ. राजेश कुमार, बीजेपी जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी, कांग्रेस जिलाध्यक्ष आनंद जोशी सहित देश-विदेश से आए हजारों लोगों ने नम आंखों से उन्हें अंतिम विदाई दी।

राष्ट्रपति का शोक संदेश

राष्ट्रपति द्रौपद्री मुर्मु ने गहरा शोक जताते हुए अपने संदेश में लिखा है कि राजयोगी बीके निर्वैर का जीवन मानव जाति के कल्याण के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण था। उनकी उल्लेखनीय जीवन यात्रा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। विभिन्न संस्थाओं के महासचिव, प्रबंध न्यासी और उपाध्यक्ष के रुप में उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं के प्रसार में एक प्रभावी साधन के रुप में कार्य किया। वे करुणा और ज्ञान के प्रतीक थे। वैश्विक शांति और मूल्य-आधारित समाज के लिए उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। आपको और पूरे ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के साथ-साथ इसके अनगिनत भक्तों के प्रति मेरी संवेदनाएँ स्वीकार करें।

प्रधानमंत्री का शोक संदेश

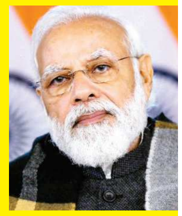

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक संदेश में कहा है कि बीके निर्वैर भाई युवावस्था में ब्रह्माकुमारीज़ में आए और अपना पूरा जीवन उन्होंने मानवसेवा में लगा दिया। उनका समाज सेवा में अविस्मरणीय योगदान है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसी महान

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का शोक संदेश

केंद्रीय मंत्री व भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्ढा ने लिखा है कि राजयोगी बीके निर्वैर भाई जी के निधन के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ। आध्यात्मिक समुदाय और ब्रह्माकुमारीज़ के प्रति उनके समर्पण ने मानव जाति की सेवा की एक स्थायी विरासत छोड़ी है। उनकी आत्मा को शांति मिले और ब्रह्माकुमारीज़ परिवार को इस कठिन समय में शक्ति और सांत्वना मिले।

महाराष्ट्र : राज्यपाल का शोक संदेश

महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने लिखा है कि आपने अपना पूरा जीवन आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया। अपनी निस्वार्थ सेवा के माध्यम से ज्ञान और करुणा का प्रसार किया। आपके मार्गदर्शन ने अनेक लोगों के जीवन को छुआ है और उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

राजस्थान :मुख्यमंत्री का शोक संदेश

राजस्थान के सीएम भजनलाल शर्मा ने लिखा है कि आपने अपना पूरा जीवन आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया। अपनी निस्वार्थ सेवा के माध्यम से ज्ञान और करुणा का प्रसार किया। आपके मार्गदर्शन ने अनेक लोगों के जीवन को छुआ है, और उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

हरियाणा :मुख्यमंत्री का शोक संदेश

हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी ने लिखा है कि आपने अपना पूरा जीवन आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया। अपनी निस्वार्थ सेवा के माध्यम से ज्ञान और करुणा का प्रसार किया। आपके मार्गदर्शन ने अनेक लोगों के जीवन को छुआ है, और उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

पूर्व मुख्यमंत्री का शोक संदेश

पूर्व सीएम वसुंधरा राजे ने शोक संदेश में कहा है कि वे एक अच्छे सुसंस्कृत इंसान थे, जिन्होंने 1982 में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित निरस्त्रीकरण जैसे महत्वपूर्ण विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ का प्रतिनिधित्व किया। आपको सेवाकार्यों के कारण कई राष्ट्रीय पुरस्कार दिए गए। आप सरल स्वभाव, दयालु और लोगों का सम्मान करने वाले नेकदिल इंसान थे।

ब्रह्मा बाबा से मिलने के बाद बदली जीवन की दिशा

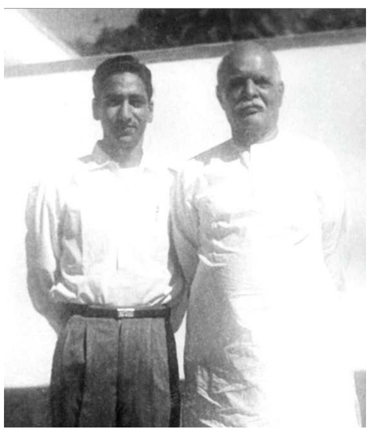

एक वर्ष की उम्र में मां का छूटा साथ-

पंजाब के गुरदासपुर में 20 नवंबर 1938 को अकाली परिवार जन्मे बीके निर्वैर भाई का बचपन से ही धर्म-अध्यात्म के प्रति विशेष लगाव लगा। एक वर्ष की उम्र में ही आपके जीवन से माँ का साया उठ गया। इसके बाद भाईयों ने परवरिश की। होश संभाला ही नहीं था कि तब नौ वर्ष की उम्र में 15 अगस्त, 1947 में देश की आजादी की खबर सुनी और पिता भी पुराने शरीर से मुक्त होकर इस दुनिया से विदा हो गए। तीन भाइयों में सबसे छोटे राजयोगी निर्वैर भाई के पालन-पोषण में किसी भी तरह की कोई कमी नहीं आई और भाइयों ने माता-पिता का प्यार देकर बड़ा किया। उनका जन्म भले ही अकाली परिवार में हुआ परन्तु उनके जीवन का झुकाव आध्यात्मिकता के प्रति लगातार बढ़ता रहा।

लगातार बदलता रहा स्कूल-

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कई स्कूलों में हुई। प्राइमरी से लेकर दसवीं तक उर्दू में पढ़ाई पूरी हुई। प्रथम कक्षा पंगाला और फिर कक्षा दो से लेकर चौथी क्लास तक ओजनवाला स्कूल में हुई। फिर इसके बाद पांचवी से लेकर आगे तक मुकेरिया के एंग्लो संस्कृति हाई स्कूल में अध्ययन कार्य पूरा हुआ। बचपन से ही मेधावी होने के कारण उन्हें चौथी क्लास से स्कॉलरशिप मिलने लगी थी।

किताबों ने मोड़ा ज़िन्दगी का रुख-

राजयोगी निर्वैर के बड़े भाई की घर में ही बड़ी लाइब्रेरी थी। उनके बड़े भाई उन्हें पढ़ने के लिए ज्ञानवर्धक किताबें दिया करते थे परन्तु इनका मन स्वामी रामतीर्थ की किताबें पढ़कर ही तृप्त हो जाता था। हाई स्कूल की पढ़ाई के दौरान स्वामी विवेकानंद की किताबों से ज्यादा लगाव बढ़ गया। इस पर उन्होंने स्वामी विवेकानंद के बताए चार प्रकार के योग को बड़ी बारीकी से अध्ययन करते और प्रातः काल अभ्यास करते थे। यहां से ही आध्यात्मिकता के प्रति झुकाव लगातार बढ़ता गया। 16 वर्ष की उम्र में नेवी में इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर पद के लिए चयन हो गया और इन्टेसिव के लिए विशाखापट्नम चले गए। सन् 1955 में कुछ महीने रहने के बाद फिर वे लोनावाला चले गए और वहां डेढ़ वर्ष तक रहकर पानी के जहाज में हर तरह की ट्रेनिंग ली। इसके बाद गुजरात के जामनगर में ट्रांसफर हो गया। जामनगर में इन्टेसिव पूरी हो गई। जहाज में ही रडार से लेकर सारी चीजों का बारीकी से प्रशिक्षण लेकर इलेक्ट्रॉनिक के क्षेत्र में पारंगत हो गए थे।

विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा गया

- वर्ष 1999 में इंटरनेशनल पेंगुइन पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'राइजिंग पर्सनालिटीज ऑफ इंडिया अवॉर्ड
- वर्ष 2001 में गुजरात के राज्यपाल द्वारा गुजरात गौरव पुरस्कार के तहत 'मोरारजी देसाई शांति शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया।
- इसके अलावा समय प्रति समय कई सामाजिक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मान किया गया।

पुणे में ली इंजीनियरिंग की ट्रेनिंग, हर चीज में हो गए थे पारंगत-

इसी दौरान पुणे के इंजीनियरिंग कॉलेज में जहाज की सभी चीजों को बड़ी गहनता से देखते हुए प्रशिक्षण लिया। रहने से खाने-पीने तक सारी चीजों को बारीकी से समझा और देखा। फिर तो हर एक चीज में प्रवीण हो गए थे क्योंकि नेवी में इस बात की गहन ट्रेनिंग दी जाती है कि यदि आप जहाज में किन्हीं कारणों से अकेले हो गए तो भी जहाज को डूबने नहीं देना है। उस जमाने में भी नेवी में शानदार व्यवस्था थी। इसके साथ रडार की पूर्ण जानकारी होने के कारण रडार कन्ट्रोल रूम की भी जिम्मेवारी दी गई।

नौसेवा से इस्तीफा देकर माउंट आबू आए और यहीं के होकर रह गए-

वर्ष 1959 की बात है। पंजाब में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र की शुरुआत हुई। अध्यात्म और योग में रुचि होने के कारण आप संस्थान से जुड़ गए और नियमित रूप से आध्यात्मिक सत्संग में भाग लेने लगे। लेकिन माउंट आबू में वर्ष 1960 में संस्थापक ब्रह्मा बाबा से मिलने के बाद आपके जीवन की दिशा बदल गई। तभी आपने निश्चय कर लिया कि अब पूरा जीवन समाजसेवा और विश्व कल्याण के लिए समर्पित करना है। इसके बाद आपने भारतीय नौसेवा से इस्तीफा देकर पूरी माउंट आबू आए और यहीं के होकर रह गए।

गंभीर व्यक्तित्व के थे धनी-

सेवा के प्रति लगन, समर्पण और तीक्ष्ण बुद्धि के चलते कुछ ही समय में ब्रह्मा बाबा ने आपको महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी। इस तरह आपको जीवन में जो भी जिम्मेदारी मिली उसे पूरे मनोभाव और लगन से निभाया। सेवा-साधना के पथ पर आगे बढ़ते हुए आप संस्थान के महासचिव बने। कोई भी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें आपके पास किसी तरह की समस्या लेकर जाते तो आप उसका उचित रूप से समाधान देते थे।

संयुक्त राष्ट्र के सम्मेलन में लिया भाग-

वर्ष 1982 में बीके निर्वैर भाई ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित निरस्त्रीकरण (SSOD) पर दूसरे विशेष सत्र में विश्व विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। जहां उन्होंने आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव जेवियर पेरेज डी कुएलर और अन्य गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की। इसके अलावा मुख्यालय शांतिवन में हर वर्ष होने वाली राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों की अध्यक्षता की।

मुख्यालय के मैनेजमेंट में रही अहम भूमिका-

वर्ष 1974 से लेकर आज तक ब्रह्माकुमारीज के मैनेजमेंट में आपकी अहम भूमिका रही। आपके कुशल मार्गदर्शन में अनेक ऐतिहासिक कार्य किए गए। ग्लोबल हॉस्पिटल की स्थापना और संचालन में आपने शुरू से अब तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आप हॉस्पिटल के मुख्य ट्रस्टी थे। आपके ही मार्गदर्शन में 50 एकड़ में बनने वाले ग्लोबल मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल का हाल ही में भूमिपूजन किया गया था।

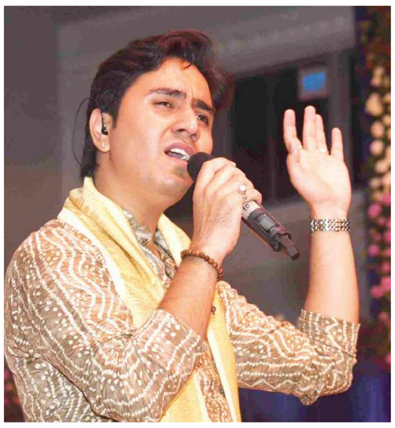

प्रस्तुतियों से बिखेरा कला का जादू

मैंगलोर से आए कलाकारों ने किया मंत्रमुग्ध

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन में प्रतिदिन शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मैंगलोर से आए नृत्य निकेतन के कलाकारों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। वहीं स्प्रीचुअल नाइट में इंडियन आइडल सेशन- 14 के सेकंड रनरअप राजस्थान बालोटरा के पीयूष पंवार ने सुंदर नगमे पेश कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। इसके अलावा मुंबई से आए चांद मिश्रा एवं शिवरथ ग्रुप के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों का ऐसा जादू बिखेरा की सभी देखते रह गए। कलाकारों की जुगलबंदी और कदमों की थिरकन ने हर किसी का मन मोह लिया। देश-विदेश से आए लोगों ने खूब आनंद लिया।

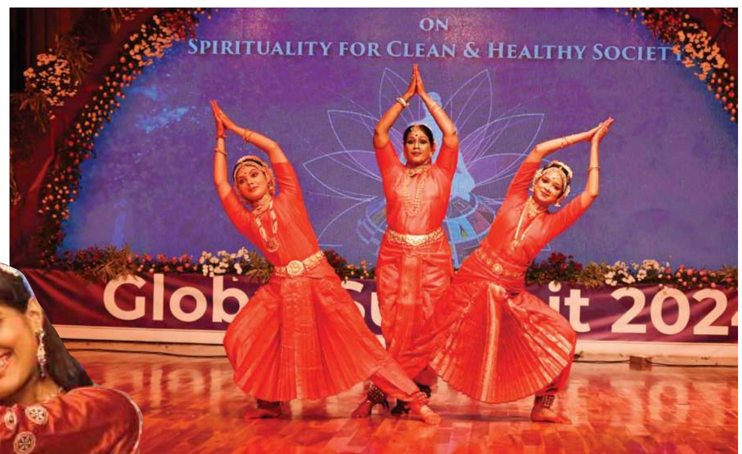

रियल लाइफ

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के नाम पत्र...

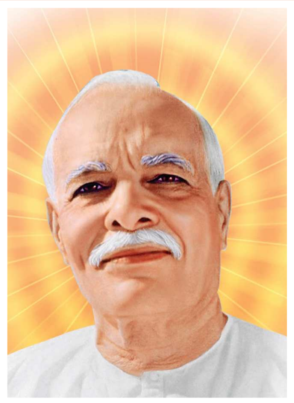

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करके याद द्वारा बुद्धि का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़े।

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

दिनांक 1 सितम्बर, 1954 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी को एक अन्य पत्र भेजा गया। इस पत्र में लिखा गया-

'प्रिय प्रभु की सन्तान,

हम भारत-माताएं और कन्याएं भारत के कल्याणार्थ अपना कर्त्तव्य समझ कर आपको सविनय सूचित करती हैं कि भारतवासियों को स्वधर्म की शिक्षा न मिलने के कारण, भारत अनाथ और अति दीन हो गया है। केवल इतना ही नहीं अपितु अपने सर्वोत्तम दैवी धर्म को न जानने के कारण वे अनेक मध्यम तथा कनिष्ठ 'धर्मों' में परिवर्तित हो गए हैं और होते जा रहे हैं।

भारत के प्रधान पद पर आरूढ़ आप और नियुक्त किए गए राज्यपाल तथा मंत्रीगण आदि, आदि सनातन, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा-प्रधान दैवी धर्म को जान जाएंगे तो आपकी सहायता से भारत भूमि कल्प (5000 वर्ष) पहले की तरह जन्म-जन्मान्तर के लिए दो मुकुटधारी राजाओं की भूमि बन जाएगी और सृष्टि में इसकी जय- जयकार होगी। विनाश ज्वाला ठीक कल्प पहले के समान अब कलियुग और सतयुग के आरम्भ के संगम पर भगवद्गीता के प्रोग्राम के अनुसार प्रज्वलित हो रही है। अतः अलौकिक शुभ कार्य में तत्पर हो जाना ही आप जैसे बुद्धिमान तथा धर्म-विश्वासी प्रधान का कर्त्तव्य है।

यह पत्र बाद में हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में छपाकर जन-साधारण को बांटा भी गया। परन्तु जनता तथा उन द्वारा चुने नेता अब धर्म की बातों की ओर कहां इतना ध्यान देते थे? आज तो भारत अपने उच्च धर्म की निधि को खो चुका है।

जापान में विश्व धर्म-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रणः सन् 1954 में जापान में 'शिमिजु नगर' में एक 'विश्व-धर्म-सम्मेलन' में सम्मिलित होने के लिए 'यज्ञ माता' के पास आबू में निमन्त्रण पहुँचा। यज्ञ- माता ने ब्रह्माकुमार आनन्दकिशोर जी तथा ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी, ब्रह्माकुमारी रतनमोहिनी जी को ईश्वरीय सन्देश देने के लिए जापान भेजा। इन्होंने सम्मेलन में खुले शब्दों में परमपिता परमात्मा के अवतरण के बारे में जानकारी दी क्योंकि सम्मेलन का एक विषय 'परमात्मा का अवतरण' था। सम्मेलन की कार्य-सूची में 'विश्व-शान्ति' का विषय भी शामिल था। ब्रह्माकुमारी रतन मोहिनी जी, जोकि वर्तमान में संस्थान की मुख्य प्रशासिका हैं, लिखती हैं -

व्यक्तिगत शान्ति और विश्व-शान्ति विषय पर भाषणः हमने निःसंकोच सभी को बताया कि विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए पहले तो व्यक्ति के मन में शान्ति होना ज़रूरी है क्योंकि व्यक्ति ही समाज की एक इकाई है। व्यक्ति के मन में शान्ति तभी हो सकती है जब उसके कर्म अच्छे हों क्योंकि सुख-दुःख का आधार मनुष्य के कर्मों पर है। पुनश्च कर्मों का आधार मनुष्य के मन पर है क्योंकि कर्म करने से पहले मनुष्य के मन में संकल्प उठता है अथवा इच्छा उत्पन्न होती है, तब ही कर्मेन्द्रियाँ कर्म में तत्पर होती हैं। अतः मनुष्य के मन अथवा विचारों का सात्त्विक होना होना ज़रूरी है। मन को कोई-न-कोई विकार (काम, क्रोधादि) ही अपवित्र तथा अशान्त करता है। मन को कण्ट्रोल करने वाली बुद्धि है। परन्तु आज मनुष्य की बुद्धि में बल नहीं रहा इसलिए मनुष्य आज चाहता कुछ है और सोचता कुछ और ही है। परन्तु मन उससे कुछ और ही करा देता है। अतः बुद्धि में बल भरने के लिए एक तो ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता है क्योंकि ज्ञान ही बुद्धि की खुराक है और दूसरे, इसके लिए परमपिता परमात्मा से बुद्धि का योग होना ज़रूरी है क्योंकि परमात्मा ही सर्वशक्तिवान ज्ञान के सागर और पतित-पावन हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करके याद द्वारा बुद्धि का सम्बन्ध परमात्मा से जोड़े। भारत का यही प्राचीन राजयोग है जिससे कि पहले भारत कभी विश्व का एक आश्चर्य था। यह योग स्वयं परमात्मा ने ही सिखाया था क्योंकि वही अपना सत्य परिचय दे रहे हैं।

क्रमशः अगले अंक में आप जानेंगे आगे की कहानी।

प्रेरणापुंज

शांति में जो सुख, प्रेम और आनंद है वह हमारी संपत्ति है

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

हम कहां भी बैठे हैं, किधर भी किसके साथ भी हैं, कोई भी कार्य कर रहे हैं.. काम तो हाथ कर रहे हैं चलो पांव से कहां जा रहे हैं लेकिन स्थिति अन्दर से सदा एकरस ऊंची रहे जिसको कोई नीचे उतार नहीं सकता है। कम से कम शान्ति स्तंभ की तरह बन जाओ। बाबा ने अपना यादगार हमारे सामने खड़ा कर दिया - टॉवर ऑफ पीस, लव, नॉलेज - हम ऐसे खड़े हो जाएं तो सेवा क्या है? बाबा को प्रत्यक्ष करना कोई बड़ी बात नहीं है, परन्तु स्थिति वह रहे, बनाने वाले ने हमारी स्थिति बनाने के लिए अपना यादगार हमारे सामने खड़ा किया है। बाबा जैसे सदा हमारे सामने खड़ा किया है - बच्चे मैंने जो तुमको प्यार दिया है, ज्ञान दिया है, पॉवर दी है उससे अपनी स्थिति को खड़ा करके रखो। सिर्फ हम उसमें स्थित रहें, प्यूरिटी में रहें, पीसफुल रहें। अन्दर खोल के अपने को देखें, मेरे पास अपवित्रता की अंश भी न हो, अशुद्ध संकल्पों की उत्पत्ति रिंचक मात्र न हो। जिसके अन्दर प्यूरिटी है उनके पास पीस, लव होगा ही।

राजयोगिनी दादी जानकी, पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

शिवबाबा शान्ति का सागर शान्ति भर देता है। बाबा पवित्रता का सागर बनाता है क्योंकि वह ऐसा पवित्रता का सागर है। उससे जो प्यूरिटी आती है वही पीसफुल, लवफुल और ब्लिसफुल बनाएगी। जिसका दोनों बाप से जिगरी प्यार है उसको बनना आसान है। जो मीठे बाबा की बातों को भूल और बातों में अपना समय व्यर्थ गंवाएं, अपनी स्थिति बनाने की बात को भूल परिस्थितियों के अंदर में परेशान होता रहे, वह कौन है? परेशान होना, दूसरों को परेशान करना, यह अपने आपको बन्धन में फंसाना है जो बाबा कहते उड़ता पंक्षी के बजाए पिंजरे का पंक्षी बन जाते हैं। तो उड़ता पंक्षी बनने के लिए दो बातों की आवश्यकता है -एक तो लाइफ में प्यूरिटी हो, अन्दर में पीस हो, दो के बिगर और तीसरी बात प्यूरिटी में इम्प्योर संकल्प भी आया, वैर भाव का संकल्प आया तो वह इतना पक्का हो जाता है जो छोड़ता ही नहीं है। व्यर्थ, अशुद्ध संकल्प बहुत कड़े बन्धन बन जाते हैं उससे छूट ही नहीं सकते हैं। पुराने देह के बन्धन, काम, क्रोध आदि के वह सब बन्धन तो छूट गए परन्तु यह जो फालतू व्यर्थ संकल्प आते हैं। इस बन्धन से अभी छूटे नहीं हैं? जरा सा अन्दर अशुद्धि है तो कभी भी वह शान्त नहीं हो सकते हैं। वह कभी प्रेम और धीरज से पांच मिनट भी एकाग्र हो करके नहीं बैठ सकते हैं क्योंकि अन्दर की जो थोड़ी सी भी अशुद्धि है वह ऐसा करने नहीं देगी। शान्ति में जो सुख है, प्रेम है, आनन्द है वह हमारी एक सम्पत्ति है। वह अगर हम अभी बाबा से ले करके फिर संभाल कर नहीं रख सकते हैं तो हमारे जैसा मूर्ख कोई नहीं होगा। इसलिए अभिमान वश कभी यह नहीं समझो कि मैं ज्ञानी हूं या मैं योगी हूं। दिखावे का ज्ञान-योग अभिमान बना देता है। सच्चे को कुछ बोलने की या दिखाने की आवश्यकता नहीं है। **क्रमशः**

> शान्ति में जो सुख है, प्रेम, आनंद है वह हमारी सम्पति है। यदि इसे बाबा से लेकर फिर संभाल कर नहीं रख सकते हैं तो हमारे जैसा मूर्ख कोई नहीं होगा।

अव्यक्त इशारे

दुआओं का खजाना जमा होने से मिलती है 'खुशी'

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

हम सबने जीवन की नैया शिवबाबा के हवाले कर दी है और जब जीवन की नैया की जिम्मेवारी बाबा को दे देते हैं तो हम डबल लाइट बन जाते हैं। हमने अपनी जिम्मेवारी बाबा को दे दी और बाबा ने फिर हमको जो जिम्मेवारी दी है वह जिम्मेवारी बोझ नहीं है, उसमें खुशी है। बाबा ने जिम्मेवारी दी कि बच्चे आप विश्व-कल्याणकारी बन अपने मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा अपने सम्बन्ध-सम्पर्क अथवा कर्म द्वारा विश्व-सेवा करते रहो। इस जिम्मेवारी को निभाने से खुशी होती है क्योंकि जब विश्व की आत्माओं का कल्याण हो जाता है, तो जिसका अकल्याण से कल्याण हो जाए, उसके दिल से दुआएं निकलती हैं और वह दुआएं हमको मिलती हैं तो दुआओं का खज़ाना जमा होने से हमको भी खुशी होती है। हिम्मत आती है, उमंग-उत्साह आता है कि सेवा में और आगे बढ़ते जाएं। इसीलिए बाबा की जिम्मेवारी बहुत हल्की है और प्राप्ति कराने वाली है, क्योंकि दुआएं मिलना, दुआएं जमा होना यह एक बहुत सूक्ष्म प्राप्ति है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी), पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

हमको बाहर से पता नहीं पड़ता है मानो आपने किसी को परिचय दिया और वह बाबा का बन गया तो उसके मन से बार-बार निकलता है कि आपने हमको सही रास्ते पर लगा दिया, तो यही उनके दिल की दुआएं मिलती हैं। यह भी सबको अनुभव होगा कि जब भी हम किसी की सेवा करते हैं, चाहे भाषण करें, चाहे व्यक्तिगत किसी को बाबा का परिचय दें तो उसी समय प्रत्यक्षफल मिलता है। अन्दर-ही-अन्दर बहुत खुशी होती है, यह बाबा का बन गया। तो खुशी भी होती और दुआएं भी जमा होती तो जब इतनी प्राप्ति है तो बोझ नहीं लगता। कहां से छोटी सी भी प्राप्ति हो जाती है तो अल्पकाल की खुशी कितनी होती है, एक लाख की लॉटरी आ गई तो कितनी खुशी में नाचते रहते हैं, पागल भी हो जाते हैं और हमको परमात्मा द्वारा खुशी का खज़ाना मिलता है, हमारी खुशी अविनाशी है, उन्हों को विनाशी चीज़ों के कारण मिलती है इसलिए विनाशी है। हमको अविनाशी पिता द्वारा मिलती है इसलिए हमारी खुशी अविनाशी खुशी है तो बोझ हट जाता है, डबल लाइट बन जाते हैं और जो डबल लाइट होगा, वह नाच सकता है।

हम कोई पांव से नहीं नाचते लेकिन हमारा मन खुशी में नाचता है और खुशी में तो सभी नाच सकते हैं। चाहे कोई बेड पर भी है तो भी खुशी में नाच सकता है क्योंकि यह मन की बात है। सभी इस प्रकार से खुशी में नाचते रहते हो? अभी तो मधुबन में एक्स्ट्रा खुशी मिल गई, सबके चेहरे खुशी में मुस्कुराते हैं। लेकिन घर-परिवार में कभी कोई बात आ गई तो चेहरा बदल जाता है। कभी सोच में, कभी फिकर में, कभी चिंताओं के सागर में डूब जाते हैं। एक दिन चेहरा बहुत खुश और दूसरे दिन देखेंगे थोड़ा सा उदास.. पूछो भाई क्या हो गया? कल तो तुम नाच रहे थे, आज तुम्हारा चेहरा ऐसा क्यों हो गया? तो क्या कहते- आपको क्या पता हमारी प्रवृति की बातें आप तो अलग रहते हैं। लेकिन हमलोग भी आप सब प्रवृति वालों का अनुभव सुनते-सुनते अनुभवी हो गए हैं। **क्रमशः**

> हमें परमात्मा द्वारा खुशी का खज़ाना मिलता है, हमारी खुशी अविनाशी है तो कितना खुश रहना चाहिए

संपादकीय

आंतरिक वृत्तियों को दिव्य बना देता है अध्यात्म

आध्यात्मिक ज्ञान हमारी वृत्तियों को शुद्ध और सात्विक बनाने के साथ उन्हें दिव्य बना देता है। जब हम नियमित रूप से आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण, पठन-पाठन और अध्ययन करते हैं तो हमारी चेतना का शुद्धिकरण होना शुरू हो जाता है। अंतर्मन में जो नकारात्मक वृत्तियां छिपी रहती हैं वह दूर हो जाती हैं और उनकी जगह आंतरिक शुद्धता, स्वच्छता और मन की निर्मलता का वास हो जाता है। बदलाव एक निरंतर प्रक्रिया के तहत होता है। इस बदलाव में राजयोग महत्वपूर्ण और सबसे अहम भूमिका निभाता है। देखने में आया है कि जब तक हम स्वयं के ऊपर ध्यान नहीं देते हैं, अपने आप का चिंतन-मनन और विश्लेषण नहीं करते हैं तब तक हमारे दुर्गुण दूर नहीं होते हैं। जिस दिन हमारी चेतना जागृत हो जाती है उसी दिन से हमारे जीवन में बदलाव की शुरुआत हो जाती है। ज्ञान और योग दो ऐसी दिव्य शक्तियां और विधि हैं जो हमारी आत्मा के तमाम मनो विकारों, दूषित वृत्तियों को दूर कर देती हैं। आध्यात्मिक साधना में जुटे साधक में स्वाभाविक रूप से गंभीरता, सरलता, दिव्यता आ जाती है। उसका आभामंडल आकर्षित और दिव्य हो जाता है। अध्यात्म हमारे जीवन को पूर्णता प्रदान करता है। जीवन को दिशा देता है। मन की व्याधियों को दूर करता है। यदि जीवन में सच्ची सफलता, आनंद, खुशी और शांति चाहिए है तो वह बिना आध्यात्मिक ज्ञान के संभव नहीं है। अध्यात्म तो हमारी धरोहर और संस्कृति है, अब उसके ओर लौटने का वक्त आ गया है।

बोध कथा/जीवन की सीख

सुखी रहने का तरीका

एक बार की बात है संत तुकाराम अपने आश्रम में बैठे हुए थे। तभी उनका एक शिष्य, जो स्वाभाव से थोड़ा क्रोधी था उनके समक्ष आया और बोला- गुरूजी, आप कैसे अपना व्यवहार इतना मधुर बनाए रहते हैं। ना आप किसी पर क्रोध करते हैं और ना ही किसी को कुछ भला-बुरा कहते हैं? कृपया अपने इस अच्छे व्यवहार का रहस्य बताइए? संत बोले- मुझे अपने रहस्य के बारे में तो नहीं पता, पर मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूं। मेरा रहस्य! वह क्या है गुरु जी?" शिष्य

ने आश्चर्य से पूछा-तुम अगले एक हफ्ते में मरने वाले हो। संत तुकाराम दुखी होते हुए बोले। कोई और कहता तो शिष्य ये बात मजाक में टाल सकता था, पर स्वयं संत तुकाराम के मुख से निकली बात को कोई कैसे काट सकता था? शिष्य उदास हो गया और गुरु का आशीर्वाद लेकर वहां से चला गया। उस समय से शिष्य का स्वभाव बिलकुल बदल सा गया। वह हर किसी से प्रेम से मिलता और कभी किसी पर क्रोध नहीं करता। अपना ज्यादातर समय ध्यान और पूजा में लगाता। वह उनके पास भी जाता जिससे उसने कभी गलत व्यवहार किया था और उनसे माफी मांगता। देखते-देखते संत की भविष्यवाणी को एक हफ्ते पूरे होने को आए। शिष्य ने सोचा आखिरी बार गुरु के दर्शन कर आशीर्वाद ले लेते हैं। वह उनके समक्ष पहुंचा और बोला- गुरुजी, मेरा समय पूरा होने वाला है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए। मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है पुत्र। अच्छा, ये बताओ कि पिछले सात दिन कैसे बीते? क्या तुम पहले की तरह ही लोगों से नाराज हुए उन्हें अपशब्द कहे? संत तुकाराम ने प्रश्न किया। नहीं-नहीं, बिलकुल नहीं। मेरे पास जीने के लिए सिर्फ सात दिन थे, मैं इसे बेकार की बातों में कैसे गंवा सकता था? मैं तो सबसे प्रेम से मिला और जिन लोगों का कभी दिल दुखाया था उनसे क्षमा भी मांगी। संत तुकाराम मुस्कुराए और बोले- बस यही तो मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है। मैं जानता हूँ कि मैं कभी भी मर सकता हूँ, इसलिए मैं हर किसी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता हूँ, और यही मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है।

सीख : शिष्य समझ गया कि संत तुकाराम ने उसे जीवन का यह पाठ पढ़ाने के लिए ही मृत्यु का भय दिखाया था। वास्तव में हमारे पास भी सात दिन ही बचे हैं। आठवां दिन तो बना ही नहीं है। आइए आज से परिवर्तन की शुरुआत करें। हमारा दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार ही हमारी पहचान होती है।

मेरी कलम से

साध्वी भगवती सरस्वती
अध्यक्ष, डिवाइन शक्ति फाउंडेशन, ऋषिकेश, उत्तराखंड

ब्रह्माकुमारीज़, क्वांटिटी-क्वालिटी दोनों स्तर पर डिवाइन सेवा कर रही है

28 वर्ष पूर्व अमेरिका छोड़कर भारत आईं और यहीं बस गईं

आज मैं खुद को इतना भाग्यशाली समझती हूं कि इतने समय के बाद मुझे माउंट आबू ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में आने का परम सौभाग्य मिला है। पूरे विश्व में मुझे देखने का अवसर मिला है। लेकिन ऐसी कोई संस्था नहीं है जो क्वांटिटी और क्वालिटी दोनों स्तर पर इतनी डिवाइन सेवा कर रही हो। यह सेवा सिर्फ ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही है। ओम की पावर को यहां महसूस किया जा सकता है। मुझे ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। वह वन लेडी हैं जो इतनी सिम्पलिसिटी, इतनी डिवनिटी से अपना जीवन जीया है। दादी जानकी जी से हमने यही सीखा है कि जीवन में रियल ब्यूटी, रियल सुंदरता प्रयोग से नहीं होती है, वह तो जीवन की सच्चाई और सफाई से होती है। जबकि आजकल लोग इसके बहुत प्रयोग के चक्कर में हैं। चेहरे को चमकाने के लिए कितने प्रोडक्ट यूज करते हैं। जबकि जीवन की असली सुंदरता तो अध्यात्म में है। दादी ने पूरे विश्व में अपने दिव्य व्यक्तित्व से प्रेरणा दी है। सच में यही हमारी संस्कृति और सभ्यता है जो पूरे विश्व में लोगों को फील हो रहा है।

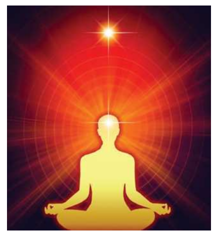

इससे ही लोगों के जीवन में परिवर्तन आ रहा है। मैं 25 वर्ष की आयु में 28 साल पहले अमेरिका से भारत आई। मैं पीएचडी कर रही रही थी कि भारत आने के बाद मेरे जीवन की दिशा बदल गई। यहां गंगा किनारे आकर मेरा पूरा जीवन बदल गया। अब केवल मैं भारत में नहीं रहती हूं बल्कि भारत मुझमें रहता है। यही हमारी भारत की संस्कृति की शक्ति और पावर है। ब्रह्माकुमारीज़ संगठन पूरे विश्व में इसी पावर को बिखेर रहा है। आज हम क्लाइमेट चैंज के बारे में बात कर रहे हैं। जैसे भीतर वैसे बाहर। हमारे जो अंदर होता है वही हमारी बाह्य प्रकृति में घटित होता है। इसलिए सबसे पहले हमें अपने मन की प्रकृति को बदलना होगा। हमें राग, द्वेष को त्यागना होगा। यह बदलाव केवल आध्यात्मिक ज्ञान और मेडिटेशन से ही संभव है। मन हमारी चाबी है। हम स्वयं को एक वस्तु मानते हैं इसलिए बाहरी चीजों को बारे में बताते हैं जबकि हम वह है ही नहीं। हम सभी तो एक आध्यात्मिक शक्ति हैं। यदि हमें क्लाइमेट चैंज करना है, सुधारना है तो सभी को शाकाहारी बनने का संकल्प करना होगा। शुद्ध अन्न को अपनाना होगा। इससे हमारी हम पर्यावरण की रक्षा कर पाएंगे।

मंगलकारी समृद्धि द्वारा उच्च दर्शन से आत्मिक वैभव

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 76

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशतनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

शिव आमंत्रण, आबू रोड। चेतना की चैतन्यता के सानिध्य में उर्ध्वगामी चिंतन का परिष्कृत स्वरुप ही मानवता के मध्य पुण्य के निर्माण हेतु मनुष्यता को अभिप्रेरित करता है जिसमें आत्मा साक्षी दृष्टा होकर स्वयं को पुण्य कर्म के क्षेत्र में स्थापित कर देती है। मन, वचन एवं कर्म की पवित्रता से महान कार्यों का शुभारंभ होते ही जीवात्मा आत्मानुभूति के भाव जगत में पहुंच जाती है और आत्मगत चेतना की आंतरिक शक्ति महानता से युक्त कर्म को प्रधानता प्रदान करते हुए जीवन में महान आत्मा स्वरूप में निर्मित होने की उपलब्धि प्राप्त कर लेती है। धर्मगत आचरण की पृष्ठभूमि पारदर्शी स्वरुप में व्यावहारिक परिणाम का आधार बनती है, जिसमें सिद्धांत एवं व्यवहार की साम्य दृष्टि धार्मिक क्षेत्र में लोक कल्याणकारी कार्यों को पूर्णता प्रदान करने में सक्षम हो जाती है।

आत्म वैभव द्वारा मंगलकारी समृद्धिः सद्गुणों के प्रति नैसर्गिक श्रद्धा, आस्था एवं मान्यता का स्थायित्व अंतर्मन को सद्प्रेरणा प्रदान करके भरपूर कर देता है जिसमें आत्मा के स्वमान, स्वरूप और स्वभाव का योगदान सदा ही समाहित रहता है जो जीवात्मा को मनुष्य जन्म की धन्यता से सराबोर कर देने में पूर्णतः सक्षम हो जाता है। आत्मा की वैभव-संपन्नता से जुड़ी सुखद अनुभूतियां आत्मिक उच्चता का प्रमाण होती हैं जिसे जीवन के व्यावहारिक जगत में मंगलकारी समृद्धि के श्रेष्ठतम स्वरूप द्वारा आत्महित में संलग्नता के साथ-साथ सर्व मानव आत्माओं के कल्याण में प्रतिपादित किया जाना न्याय संगत होता है। जीवात्मा के सानिध्य में संपूर्ण प्रकृति के तत्वों को जीवन की श्रेष्ठतम स्थितियों के संदर्भ एवं प्रसंग में स्वीकार करते हुए कल्याणकारी आत्मिक दृष्टि

का सदुपयोग सतोप्रधान सृष्टि के निर्माण हेतु किया जाना आत्मिक समृद्धि का आधार होता है। निराकारी सत्ता के प्रति आत्म समर्पण का निश्चयात्मक स्वरूप आत्मिक गुणों एवं शक्तियों को स्वयं के साथ सर्व आत्मन बन्धुओं के उत्कर्ष हेतु श्रेष्ठ, शुभ और पवित्र भाव तथा विचार जगत में रूपान्तरित कर देता है। देवात्मा स्वरूप में स्थापित होने की गतिशीलता द्वारा सदैव चेतना का परिष्कार और उससे संबद्ध अनुक्रम का निर्धारण - पुण्यात्मा, महात्मा एवं धर्मात्मा की व्यावहारिक पृष्ठभूमि के माध्यम के माध्यम से सुनिश्चित होता है।

आत्मिक स्वभाव में उच्च दर्शनः श्रेष्ठतम स्वरुप का दिग्दर्शन करते हुए जीवात्मा स्वयं को उत्कृष्टता के शिखर पर स्थापित करने हेतु तीव्रतम पुरुषार्थ को आत्मसात करती है तब जीवन में महानता की ऊंचाई पर पहुंचने की अभिलाषा बलवती होकर कर्म क्षेत्र में आत्मिक परिष्कार के कार्य में संलग्न हो जाती है। आत्मगत स्वभाव में धारणात्मक उच्चता के प्रति नैसर्गिक बोधगम्यता अंतर्निहित होती है जो अंतःकरण को सदा अभिप्रेरित करती रहती है जिससे किसी भी स्थिति में जीवन की उच्चतम अवस्था के सानिध्य में धर्म एवं पवित्र कर्म के पथ पर गतिशीलता बनी रहती है। जीवन की सामाजिक पक्षधरता साधक की मनःस्थिति द्वारा अच्छाई के प्रति सकारात्मक भाव बनाएं रखती है ताकि उत्तम को उपनाने की सार्थकता के साथ श्रेष्ठता को भी आत्मसात किया जा सके क्योंकि मनो वैज्ञानिक दृष्टि से श्रेष्ठतम और महानतम की प्राप्ति ही जीवन की उपलब्धि का आधार बनता है जो जीवात्मा को जीवन की दार्शनिकता से धर्मात्मा एवं देवात्मा के स्वरुप का साक्षात्कार करने में पूर्णतया सक्षम होता है।

धर्मगत व्यावहारिकता से रूपांतरित देवात्मा

जीवन की संवेदनशीलता का विराट पक्ष व्यक्तिगत गतिशीलता को अग्रसर करने में विशिष्ट योगदान प्रदान करता है जिसमें मानवता की उच्चतम स्थितियों के लिए भागीरथ प्रयास की विभिन्न श्रृंखलाएं गतिमान रहती हैं और अपेक्षित स्थिति में पुण्यात्मा बन जाने के लिए अंतर्मन से पुरुषार्थ को क्रियान्वित करने में सम्बद्धता बनी रहती है। चेतना की चैतन्यता के सानिध्य में उर्ध्वगामी चिंतन का परिष्कृत स्वरुप ही मानवता के मध्य पुण्य के निर्माण हेतु मनुष्यता को अभिप्रेरित करता है जिसमें आत्मा साक्षी दृष्टा होकर स्वयं को पुण्य कर्म के क्षेत्र में स्थापित कर देती है। मन, वचन एवं कर्म की पवित्रता से महान कार्यों का शुभारंभ होते ही जीवात्मा आत्मानुभूति के भाव जगत में पहुंच जाती है और आत्मगत चेतना की अंतरिक शक्ति महानता से युक्त कर्म को प्रधानता प्रदान करते हुए जीवन में महान आत्मा स्वरूप में निर्मित होने की उपलब्धि प्राप्त कर लेती हैं। धर्मगत आचरण की पृष्ठभूमि पारदर्शी स्वरुप में व्यावहारिक परिणाम का आधार बनती है जिसमें सिद्धांत एवं व्यवहार की साम्य दृष्टि धार्मिक क्षेत्र में लोक कल्याणकारी कार्यों को पूर्णता प्रदान करने में सक्षम हो जाती है। जीवात्मा का बाह्य एवं आन्तरिक स्वरुप आध्यात्मिक पुरुषार्थ के कारण परिवर्तनशील हो जाता है जो सम्पूर्णता के सन्दर्भ में एवं प्रसंग में आत्मिक स्थिति, अवस्था एवं स्वरुप की एकरूपता को नैतिकता के समग्र परिदृश्य में आत्मगत संतुष्टि के परिवेश को रेखांकित करते हुए देवात्मा स्वरूप में रूपान्तरित हो जाता है।

> हमें कभी भी किसी दूसरे का हक नहीं छीनना चाहिए. मेहनत और सच्चाई से गरीबों और जरुरतमंदों की मदद करनी चाहिए।
>
> **- गुरु नानक देव जी**

> एक सज्जन व्यक्ति वह है जो अनजाने में भी किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचाए।
>
> **- गुरु तेग बहादुर सिंह**

संस्कृति की संरक्षक-महिला विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

एकमात्र भारतीय संस्कृति है जहां देवियों की पूजा होती है, देवताओं के पहले देवियों का नाम आता है: डॉ. सविता दीदी

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें पूरे भारत से 400 सुप्रसिद्ध महिलाओं ने भाग लिया। मुख्य वक्ता के रूप में महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सविता दीदी ने कहा कि जो भी प्राचीन संस्कृति चाहे यूनान की हो, चाहे ओर कोई भी हो लेकिन वो आज नहीं है लेकिन भारतीय संकृति आज भी है। भारतीय संस्कृति में देवियों की पूजा होती हैं।

उन्होंने कहा कि जैसे हर देवी का नाम पहले आता है सीता राम, राधा कृष्ण लेकिन इसमें परिवर्तन तब आया जब मुग़ल आए। राजाओं का राज्य शुरू हुआ तो नारी को आगे नहीं आने दिया गया, उन्हें शिक्षा नहीं दी गई। ये मेरा है, ये तेरा है, नहीं, बल्कि पूरा विश्व ही मेरा परिवार है। सबका कल्याण हो इसलिए हमारे देश को विश्व गुरु कहा गया है। जब हम बच्चों को अच्छे संस्कार देते हैं तो बच्चे कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जाएंगे। भारतीय संस्कृति में शक्ति है। यह मूल्य हमें आनंद प्रदान करने वाले हैं। आज लाखों परिवार हैं जो इस कलियुग में भी श्रेष्ठ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। एक देवी के आगे जब मनुष्य जाता है तो नमन करता है और एक अभिनेत्री के आगे जाने से दैहिक वृति उत्पन्न होती है।

पूर्व संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी, मिस इंडिया इंटरनेशनल 2019 सिद्धि जौहरी, जमात-ए-इस्लामी हिन्द पीआर सेक्रेटरी डॉ. फातिमा, एम्स की कार्डियक स्नेथिसिया की पूर्व एचओडी डॉ. उषा किरण, गाज़ियाबाद मेवाड़ इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट की निदेशिका डॉ. अलका, विंग की अध्यक्ष बीके चक्रधारी दीदी, ओरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन बीके हुसैन बहन ने किया।

भोपाल, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ ब्लेसिंग हाउस द्वारा मीडिया के बदलते परिदृश्य और चुनौतियाँ के संबंध में संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने अतिथि के रुप में भाग लिया। नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट (इंडिया) की राष्ट्रीय पदाधिकारी की बैठक अध्यक्ष रास बिहारी, सिंगरौली विधायक राम निवास शाह, ब्लेसिंग हाउस की निदेशिका डॉ. रीना दीदी ने मुख्य रुप से मौजूद रहीं।

बैतूल, मप्र। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 20 हजार से भी अधिक लोगों को नशा मुक्ति के लिए जागरुक करने संकल्प दिलाया गया। रैली का शुभारंभ केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके, सेवाकेंद्र संचालिका बीके मंजू दीदी ने किया।

गुमला, झारखंड। नशामुक्त भारत अभियान का शुभारंभ सेवाकेंद्र संचालिका बीके शांति के निर्देशन में किया गया। इसमें अतिथि अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सुरेश प्रसाद यादव, सेवानिवृत्त पूर्व जिला प्रधान सत्र न्यायाधीश ओम प्रकाश पांडे मुख्य रुप से मौजूद रहे।

दुर्ग, छग। नशा-मुक्त भारत अभियान के तहत जिला स्तरीय शुभारंभ सांसद विजय बघेल, विधायक गजेन्द्र यादव, संभागायुक्त एसएन राठौर, आईजी आरजी गर्ग, कलेक्टर ऋचा प्रकाश चौधरी , डॉ. सचिन परब, संचालिका रीटा दीदी ने हरीझंडी दिखाकर रैली को रवाना किया।

राष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस पर विशाल रैली निकाली

भारत मां ने किया नशे से छुड़ाने का आह्वान

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के किशोर सागर सेवाकेंद्र एवं सामाजिक न्याय विभाग द्वारा गांधी जयंती एवं राष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस के उपलक्ष्य में नशामुक्त भारत अभियान के तहत विशाल रैली निकाली गई। इसमें मुख्य आकर्षण का केंद्र व्यसनों की गिरफ्त में जंजीरों में जकड़ी हुई भारत माता रहीं, जिनके बारे में बताते हुए बीके कल्पना बहन ने कहा कि भारत माता की करूण पुकार सुनो, वह हमसे कह रहीं है कि देश को आजादी तो आजादी के दीवानों ने दिला दी लेकिन हे भारत के सपूतों तुम सबको मिलकर मुझे व्यसनों की गुलामी की जंजीरों से छुड़ाना है और नशा मुक्त भारत बनाना है, तभी हमारे बापू गांधी जी का सपना साकार होगा। हमारा भारत स्वर्णिम भारत,

समृद्ध भारत, सशक्त भारत, स्वच्छ भारत और स्वस्थ भारत बन सकेगा। रैली सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा दीदी के मार्गदर्शन में निकाली गई। समापन पर बीके पंकज चौबे, सत्यज्ञान भाई , रामपाल भाई, राम भाई , पवन भाई, ओमप्रकाश भाई, सत्यम भाई द्वारा एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर नशामुक्ति का संदेश दिया। रैली में सामाजिक न्याय विभाग से एआई खान, अजय खरे, सियाराम नागर एवं ब्रह्माकुमारी बहनें बीके रमा, बीके रीना, बीके रजनी एवं सभी भाई-बहनें शामिल हुए।

समस्या- समाधान

परमात्मा से सारे नाते जोड़ लें तो सब सहज हो जाएगा

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

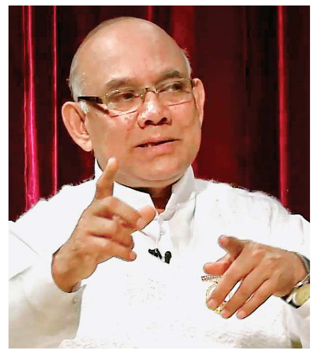

- राजयोगी बीके सूरज भाई, माउंट आबू

मैंने परमात्मा से दोस्ती का नाता भी जोड़ा हुआ है, गुड फ्रेंड (गॉड फ्रेंड) खुदा दोस्त इसके मेरे बहुत ज्यादा अनुभव हैं। नाता जोड़ो उससे वो आपकी समस्याओं को हरने लगेगा। लेकिन जो मैं जो बात मैंने पहले कहीं अपने मन को बहुत स्ट्रोंग बनाओ, कमजोर नहीं। सवेरे उठते ही संकल्प किया करो, समाधान आपके सामने रख रहा हूँ। जिसका प्रयोग मैंने किया है। जिसे लाखों लोग इस चीज को सीख गये हैं। इस सारी दुनिया में हमें जब फोन आते हैं। तब समझ में आता है कि एक सुन्दर बात संसार के बहुत लोगों ने सीख ली, मुस्लिम ने भी सीख ली, क्रिश्चियन लोंगो ने भी सीख ली, बुद्धिष्ठ ने भी सीख ली और हिन्दुओं में तो लाखो लोगों ने सीख ली। हम सर्वशक्तिवान भगवान की संतान है, वो मेरा परमपिता है तो इसका अर्थ है वो मेरा है, है या नहीं, वो मेरा है, जो कुछ उसका है वो मेरा है, उसका सबकुछ मेरा है, जैसे आपके बच्चे आपके पास अधिकार से आ जाते है न, पापा ये चाहिए अब पापा को देना पड़ता है पैसे कहीं से भी लायें।

परमात्मा पर भी हम अधिकार कर सकते हैं..

अधिकार की फिलिंग तो जानवरों में भी होता है। शेर का बच्चा क्या होगा शेर होगा ना, तो हम सर्वशक्तिमान के बच्चे है तो हम बहुत पावरफूल हैं। स्वीकार कर लो ये सत्य को, वो सर्वशक्तिमान है तो हम मास्टर सर्वशक्तिमान है। सवेरे उठ के पाँच बार ये बातें याद कर लो आँख खुलते ही, सोई हुई शक्तायाँ जग जाएगी। जब शक्तियाँ जग जाती है तो उससे वायब्रेशन फैलती है चारो ओर, आपकी आँखों से फैलेगी, हाथों से फैलेगी, और ये वायब्रेशन समस्याओं को नष्ट करेगें। ये वायब्रेशन अपने बाडी को भी दे सकते हैं, मैं आत्मा मस्तक पर विराजमान हूं। मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ मुझसे शक्तियों की लाल किरणें फैल रही है, ब्रेन में भी जा रही है बॉडी में भी जा रही है, अंग-अंग को ठीक कर रही है। बहुत अच्छे अनुभव होंगे इससे आपकी शक्तियां बढ़ेगी।

सोई हुई शक्तियाँ जगी रहेगी

मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ ये याद रहे तो सोई हुई शक्तियाँ सदा जगी रहेगी। जिन बच्चों की एकाग्रता नहीं होती पढ़ाई में उन सबको हम यहीं सिखातें है। सवेरे उठ कर 108 बार लिख लो 21 दिन तक कि 'मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ' एक लडक़ी का फोन आया मेरे पास, एक्जाम आने वाला है मैं बहुत पढ़ रही हूँ कुछ याद नहीं है क्या करू? मैंने कहा अभी बैठ कर लिखों मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ 108 बार, कल सवेरे लिखना, शाम को लिखना, 7 दिन तक लिखो, फिर 21 दिन तक लिखना सवेरे। अगले दिन उसका रात को फोन आ गया मैं तीन बार लिख लिया है मेरी एकाग्रता बढ़ गई है। अब मैं चार घण्टे से मैं पढ़ रही हूँ, मुझे सब याद है।

श्रेष्ठ संकल्पों के प्रयोग से सुन्दर रिजल्ट मिलते हैं

जहाँ मनुष्य को कोई उपाय नहीं दिखता, मन भटक रहा होता है, चाहे श्वास पे ध्यान लगा लो, संकल्पो पे ध्यान लगा लो नहीं लगेगा। एकाग्रता नष्ट हो गई कुछ नहीं होता। जहाँ मनुष्य रोने लगता है तो ऐसी स्थिति में संकल्प करें कि हम बहुत शक्तिशाली है ये संकल्प हम अपने साथ ले चलेगें। कुछ और सारे प्रयोग है समस्या के, भिन्न समस्याओं में हम जो कराते हैं 21 दिन का, योग साधना भी हम कराते हैं अनुष्ठान जैसा एक घण्टा रोज उनसे बहुत चीजे ठीक होती है। समस्याएं प्रभू अर्पण करना सिखेंगे, बहुत अच्छा अनुभव होंगे जीवन में। परमात्मा हमारा मात-पिता भी है परम शिक्षक भी है परम सत्गुरू भी है, उसको अपना सच्चा सत्गुरू बना लो, वो न केवल आपको मंत्र देगा वो आपको बहुत केयर भी करेगा।

श्रेष्ठ और महान योगी बनने के लक्षण-

योगी वहीं बन सकते हैं जो सांसारिक इच्छाओं को और सभी विकारों से मुख मोड़ लिया हो। जिसे इस संसार से कुछ नहीं चाहिए। न मान, न धन, न भौतिक जगत में नाम हो जाए मेरा, जो इन सबसे बाहर हो गई आत्मा। वो योग के पथ पर आगे बढ़ती है। जब तक भगवान राजी न हो हम पर। जब तक उसकी कृपा दृष्टि हम पर न पड़ जाए, तब तक भी कोई योगी नहीं बन सकता। जो परमात्मा शिव के दिलतख्तनशीन बनते हैं वो योगी बन जाते हैं। जो परमपिता को राजी कर लेते हैं वो योगी बन जाते हैं और परमात्मा सच्चाई पर, आज्ञाकारियों पर, उसके कार्यों में जो दिल से मदद करते हैं, जो दूसरों को सच्चे दिल से सुख देते हैं। वो योगी बन जाते हैं। द्यजो सुखदाई हैं वो प्रभु को अति प्यारे हैं। आज से मेरे साथ सबकुछ अच्छा होगा। विश्वास में करो। जो हो गया वो भी अच्छा, जो हो रहा है वह बहुत अच्छा। हमारे अच्छे दिन चल रहें हैं वर्तमान हमारा बहुत सुंदर हैं। भविष्य हमारे हाथ में। जो संकल्प हम करते हैं उसकी तरंगे प्रकृति में जाती हैं चारों ओर फैलती हैं। प्रकृति में और हमारे मन के संकल्पों का मिलन प्रकृति के साथ होता है और वहीं चीजें हमारे पास वापिस आती हैं। वैसा ही हमारे साथ होने लगता है। यह प्रक्रिया निरंतर चल रही है। प्रकृति में और हमारे संकल्पों में। हम अपने भविष्य के निर्माता स्वयं हैं।

हमारी जिंदगी में आध्यात्मिक सशक्तिकरण बहुत जरूरी है: अभिनेत्री आस्था चौधरी

व्यापार एवं उद्योग प्रभाग का चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन के डायमंड हॉल में व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का शुभारंभ मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी व अन्य अतिथियों ने किया। आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा व्यापार और उद्योग में सफलता विषय पर आयोजित इस राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर से चार हजार से अधिक व्यापारी और उद्योगपतियों ने भाग लिया।

सम्मेलन में मुंबई से आईं प्रसिद्ध टीवी अभिनेत्री आस्था चौधरी ने कहा कि हमारी जिंदगी में आध्यात्मिक सशक्तिकरण बहुत जरूरी है। इससे हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है। मैं खुद रोज एक घंटा योग और मेडिटेशन करती हूं। ब्रह्माकुमारीज़ में सिखाया जाता है कि व्यस्त दिनचर्या के बीच हमारे खुद के लिए समय जरूर निकालना चाहिए। किसी परिस्थिति को हम बदल नहीं सकते हैं लेकिन हम खुद को बदल सकते हैं। जब हम शांत और मजबूत होते हैं तो हर परिस्थिति से बाहर निकल सकते हैं।

अध्यात्म के समावेश से व्यापार में मिलेगी सफलताः जयपुर से आए उद्योगपति व व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के अध्यक्ष बीके एमएल शर्मा ने कहा कि मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि संस्थापक ब्रह्मा बाबा से मिलने का मौका मिला। उनसे यह आध्यात्मिक ज्ञान लिया। बाबा ने सिखाया कि खुद को आत्मा समझ कर परमपिता शिव बाबा को याद करना है। जब से मैंने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास अपने जीवन में किया है तब से दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की की है। सदा हर पल परमात्मा का साथ मिला है। जितना त्याग ब्रह्मा बाबा ने किया है इतना त्याग कोई कर नहीं सकता है। मेरे जीवन का अनुभव है कि जीवन में अध्यात्म के समावेश से हम व्यापार और उद्योग में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सुप्रीम पावर से जुड़ा रहे कनेक्शनः मुंबई से आए निजी कंपनी के सीईओ हरीश मेहता ने कहा कि इस ज्ञान को जीवन में धारण करने के बाद हम देवता बन सकते हैं। जब हम दुख की दुनिया से निकल सुख की दुनिया, सतयुगी दुनिया में जाएं तो देवता बन जाएंगे। इसकी शुरुआत हमें खुद से करना होगी। यहां शिक्षा दी जाती है कि कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो और सोच-समझकर बोलो ताकि बाद में समस्या का सामना न करना पड़े। हमारा व्यक्तित्व ऐसा हो कि सुख-दुख, मान-हानि, लाभ-हानि में हम एक समान रहें। यह तभी संभव है जब हमारा कनेक्शन निरंतर सुप्रीम पावर परमात्मा से जुड़ा रहेगा।

प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके गीता दीदी ने कहा कि यहां तीन दिन तक आप सभी ने जो आध्यात्मिक ज्ञान और शिक्षा ली है उसे अपने जीवन में धारण करेंगे तो अपने व्यापार और निजी जीवन में आगे बढ़ेंगे, सुखी रहेंगे। राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद जीवन से जुड़ी हर समस्या का समाधान मिल जाता है। मधुरवाणी ग्रुप ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संचालन मुंबई की बीके अमृता बहन ने किया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की 88 वर्षों की यात्रा पर बनी डाक्यूमेंट्री भी दिखाई गई।सम्मेलन में अलग- अलग सत्रों में देशभर से आए उद्योगपतियों और व्यापारियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। राजयोग मेडिटेशन सत्र में ध्यान की बारीकियां सिखाई गईं।

समाज को हेल्दी-वेल्दी बनाना है तो अध्यात्म अपनाना होगा: न्यायमूर्ति एस. पूजाहारी

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारी संस्था के शांतिवन स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में न्यायविद प्रभाग द्वारा आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा स्वस्थ और न्यायपूर्ण समाज विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। उड़ीसा ह्युमन राइट्स कमीशन के चेयरपर्सन न्यायमूर्ति एस. पूजाहारी ने कहा कि अंत के समय में परमात्मा की शरण ही आपके काम में आएगी, नॉलेज नहीं। आध्यात्मिकता सबके अंदर है उसे सिर्फ जागृत करने की आवश्यकता है। हम किस प्रकार परमात्मा से जुड़ सकते हैं वो हमें अध्यात्म सिखाता है। अध्यात्म से ही समाज हेल्दी और वेल्दी बन सकता है। लॉफुल सोसायटी बनाने के लिए स्प्रिचुअलिटी को जीवन में धारण करना होगा।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी संतोष दीदी ने कहा आज देश सहित पूरे विश्व की जो लॉ एण्ड ऑर्डर है वो प्रैक्टिकल में कहां तक आ रहे हैं। हम सभी की यही इच्छा है कि सारे विश्व में भारत की जिस संस्कृति का गायन है उस संस्कृति को हम फिर से स्थापन करें। फिर से हमारी सोसायटी वो वापस हेल्दी, वेल्दी और हैप्पी बन जाएं।

महासचिव व राजनीति प्रभाग के चेयरपर्सन राजयोगी बृजमोहन भाई ने कहा कि मानव ने समाज सुधार के लिए अनेकानेक नियम कानून बनाए हैं। जबकि आध्यात्मिक दुनिया में एक स्पिरिचुअल लॉ है जो कर्म के अनुसार है। लॉ ऑफ कर्मा अपने में सारे लॉ को समेटे हुए है। लॉ ऑफ कर्मा बहुत सिम्पल है जो करेगा सो पाएगा। जितना करेगा उतना पाएगा और जैसा करेगा वैसा पाएगा। यह स्पिरिचुअल लॉ है। स्प्रीलिचुअल कानून को तोड़ा नहीं जा सकता है।

न्यायविद प्रभाग की चेयरपर्सन राजयोगिनी पुष्पा दीदी ने कहा कि आज मानव की कमजोरी इच्छा और तृष्णा के रूप में बदल गई है तो मानव जीवन सुखी कैसे हो सकता है। आध्यात्मिकता हमें यही सिखाती है कि हमें जीवन को किस प्रकार से नियंत्रित करना है। मानवीय मूल्य और दैवी गुण उसका आधार है। देखा जाए तो न्याय भी वैल्यू के आधार से ही होता है। अतिथियों का शब्दों से स्वागत करते हुए मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश व ज्यूरिष्ट प्रभाग के वाइस चेयरपर्सन न्यायमूर्ति बीएल राठी ने कहा कि मन को हम सिर्फ आध्यात्मिकता के द्वारा ही हील कर सकते हैं। हमें धर्म को भी समझना होगा और अध्यात्म को भी समझना होगा तभी हम इसमें अंतर कर पाएंगे।

इन्होंने भी किया संबोधितः प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. बीके रश्मि ओझा, पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एएन जिंदल, नई दिल्ली के डीमीरा फ्राइट लिंकर्स प्रालि के डायरेक्टर जगत किशोर प्रसाद, जयपुर के एडवोकेट बीके संदीप अग्रवाल ने भी संबोधित किया। राजयोग द्वारा गहन शांति की अनुभूति राष्ट्रीय संयोजिका बीके लता अग्रवाल ने कराई। आभार उड़ीसा के प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. बीके नाथमल भाई ने किया। संचालन मुख्यालय संयोजिका बीके श्रद्धा ने किया।

संत सम्मान कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण, सहारनपुर, उप्र| दिव्य शक्ति अखाड़ा धाम द्वारा संत सम्मान व महामंडलेश्वर सुशोभन कार्यक्रम आयोजित किया गया। वक्ता के रुप में इंदौर से धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर बीके नारायण भाई ने भाग लिया। स्वामी कौशलेंद्र महाराज, स्वामी रामदेव महाराज, आचार्य महामंडलेश्वर कमल किशोर महाराज, डॉ. हरीश रावत और अखाड़ा प्रमुख स्वामी निरंजन नाथ, बीके रानी बहन, बीके नीता बहन ने संबोधित किया।

बीके हेमलता दीदी का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, इंदौर, मप्र| दयोदया चेरिटेबल ट्रस्ट, रेवती रेंज विद्या विनम्र चातुर्मास समिति तथा दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में दलाल बाग में जैन मुनि विनम्र सागर के सानिध्य में अखिल भारतीय सर्व धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें समाज की ओर से जोनल निदेशिका बीके हेमलता दीदी का सम्मान किया गया।

एक रात कन्हैया से बात... का आयोजन

शिव आमंत्रण, हाथरस, उप्र| हाथरस में 113वां प्रांतीय मेला श्री दाऊजी महाराज मेला आयोजित किया गया। इसमें मेलाध्यक्ष जिलाधिकारी राहुल पांडे द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ तपस्याधाम को एक रात कन्हैया से बात का आयोजक बनाया गया और कार्यक्रम का संयोजन बीके भावना बहिन के संयोजन में हुआ। कार्यक्रम में नपा अध्यक्ष श्वेता चौधरी, जिला प्रभारी बीके सीता बहिन, ब्लॉक प्रमुख रामेश्वर उपाध्याय, कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. विकाश शर्मा, जिला अध्यक्ष शरद माहेश्वरी मुख्य रुप से मौजूद रहे।

बीके रीटा दीदी को मेवाड़ गौरव सम्मान से नवाजा

शिव आमंत्रण, उदयपुर, राजस्थान| उदयपुर राजदरबार महल में पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया एवं महाराणा मेवाड़ लक्ष्यराज सिंह द्वारा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी रीटा दीदी को मेवाड़ गौरव द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान समाजसेवा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने और आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने पर दिया गया। इस दौरान उन्हें प्रशस्ति पत्र और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड,
जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV,
Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to:
shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960

Scan To Pay

आध्यात्मिक सशक्तिकरण से समाज बनेगा स्वस्थ और खुशहाल

चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन आयोजित: स्वस्थ और खुशहाल समाज के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण-मीडिया की भूमिका विषय पर हुआ सम्मेलन

शिव आमंत्रण, आबू रोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया विंग द्वारा मुख्यालय शांतिवन के आनंद सरोवर परिसर में चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन आयोजित किया गया। चार दिन चले सम्मेलन में देशभर से आए मीडिया गुरु, पत्रकार, संपादकों ने मंथन-चिंतन कर निष्कर्ष निकाला कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण के बिना समाज स्वस्थ और खुशहाल नहीं बन सकता है। मीडिया आगे आकर अपना दायित्व निभाए। स्वस्थ और खुशहाल समाज के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण-मीडिया की भूमिका विषय पर आयोजित सम्मेलन में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल, सोशल मीडिया, जनसंपर्क से जुड़े एक हजार से अधिक पत्रकार, संपादक, ब्यूरो चीफ ने भाग लिया। इसमें 13 अलग-अलग सत्रों में उपरोक्त विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। पांच राजयोग सत्र आयोजित किए गए।

सम्मेलन के शुभारंभ पर केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री डॉ. एल. मुरुगन ने कहा कि विकसित भारत के निर्माण में मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है। आज एक अच्छी न्यूज उतनी तेजी से वायरल नहीं होती है जितनी की एक गलत, फेंक न्यूज़ वायरल हो जाती है। पत्रकार पहले खबरों की सत्यता की जांच कर लें उसके बाद ही प्रकाशित करें। अच्छी खबरों को बढ़ावा देने से ही स्वस्थ और सुखी समाज का निर्माण होगा। आज समाज में यदि नकारात्मक माहौल बन रहा है तो हमें चिंतन करने की जरूरत है कि हम समाज में क्या भेज रहे हैं। मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण के लिए हमें जीवन में मूल्यों का समावेश करना होगा।

उन्होंने कहा कि एक पत्रकार का मौलिक अधिकार है कि वह आध्यात्मिकता से जुड़े। मीडियाकर्मी अपने निजी जीवन में अध्यात्म को अपनाएं। विश्व शांति के लिए

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था कार्य कर रही है। मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय आया हूं। यहां आकर बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूं और बहुत खुशी हो रही है। मैंने दादी रतन मोहिनी से मुलाकात कर उनका आशीर्वाद लिया। यहां की दिव्यता और पवित्र माहौल बहुत सुखदायी है।

मीडिया अपने उद्देश्य से भटक गया है: डॉ. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर के पूर्व कुलपति डॉ. मान सिंह परमार ने कहा कि आज व्यापारवाद के दौर में मीडिया अपने उद्देश्य से भटक गया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में खबरों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है जो किसी भी रीति से समाज के लिए ठीक नहीं है।

मीडिया निदेशक राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि मीडिया विंग पत्रकारों के जीवन को खुशहाल बनाने के लिए कार्य कर रहा है। हमारा मकसद है पत्रकारों के जीवन में आध्यात्मिक समावेश से समाज को सुखी संपन्न बनाने की ओर ले जाना। संस्थान के कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि हम सभी परमात्मा की संतान हैं। दुनिया विश्व बदलाव के दौर से गुजर रही है। परमात्मा का यही संदेश है कि मेरे बच्चों आप महान आत्मा, दिव्य आत्मा, पवित्र आत्मा हो। अपने स्वरूप को पहचानो और मुझे निरंतर याद करो। स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है।

आंध्रप्रदेश के बापतला से सांसद केपी टेनेटी ने कहा कि मीडिया को ऐसी खबरों को बढ़ावा देना होगा जिससे समाज में खुशहाली आई। समाज में अहिंसा का माहौल बने। अहिंसा का संदेश जाए। हर एक पेशे में चुनौतियां रहती हैं और रहेंगी लेकिन हमें इनके बीच ही समाज को आगे ले जाने के लिए सोचना होगा। सकारात्मकता को बढ़ावा देना होगा। हर कोई खुशी और आनंद चाहता है। हम सभी की इच्छा जीवन को आनंद से जीने की होती है।

आईआईएमसी के पूर्व महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि हम सभी पत्रकारों को अभियान चलाना चाहिए कि अश्लील सामग्री मुक्त समाज बने। हमें अश्लील कंटेंट को प्रचारित और प्रसारित करना बंद करना होगा। एक-एक व्यक्ति सूचना का राजदूत है। ब्रह्माकुमारीज़ समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए कार्य कर रही है। ये ब्रह्माकुमार भाई-बहनें त्याग की मूर्ति हैं। हमारे यहां तो लोकमंगल की भावना को लेकर कार्य करने की परंपरा रही है। हमें संवाद की परंपरा की ओर फिर से बढ़ने की जरुरत है। हम जगतगुरु की बात कर रहे हैं लेकिन कोई शिष्य बनने के लिए तैयार है।

नई दिल्ली दैनिक जागरण के एक्जीक्यूटिव एडिटर विष्णु प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हम राष्ट्र और राष्ट्रीयता के स्तंभ हैं। हम सत्यनिष्ठ लोग हैं। लोकतंत्र में संरक्षण की जरुरत है लेकिन यदि मीडिया को नियंत्रीकरण किया जाएगा तो वह अपना अस्तित्व खो देगा। भारत का पत्रकार आध्यात्मिक ही होगा।

दिल्ली के पीआईबी के पूर्व प्रिंसिपल डीजी कुलदीप सिंह ने कहा कि कई बार हम पत्रकारों को अपने सिद्धांतों के साथ समझौता करना पड़ता है। लेकिन हमें अपने मूल्यों को कायम रखना होगा।

इन्होंने भी किया संबोधित... नोएडा के इंडिया टुडे मीडिया संस्थान डीन एवं निदेशक डॉ. ध्रुव ज्योति पति, जेईसीआरसी यूनिवर्सिटी जयपुर के स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन डीन व प्रो. डॉ. नरेंद्र कौशिक, जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जेएआर) के अध्यक्ष हरि बल्लभ मेघवाल, दिल्ली की संचार सलाहकार एवं इवेंट मैनेजमेंट प्रियदर्शिनी नरेंद्र, मप्र ग्वालियर के वरिष्ठ पत्रकार सुरेश शर्मा, नगर निगम जयपुर हेरिटेज के जनसंपर्क विभाग के संयुक्त निदेशक मोतीलाल वर्मा, गुजरात डीसा के स्तंभकार व स्वतंत्र पत्रकार भगवानदास ठक्कर, दिल्ली की कम्यूनिकेशन कसल्टेंट एवं इवेंट मैनेजर प्रियदर्शिनी नरेंद्र, इंदौर से आए रेडियो सरगम के निदेशक बीके आशीष गुप्ता, ग्वालियर से आए आईटीएम यूनिवर्सिटी के जेएमसी डिपार्टमेंट के एचओडी डॉ. मनीष जैसल, विंग के नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके सुशांत, बीके सरला आनंद एवं बीके निकुंज, ब्रह्माकुमारीज़ के पीआरओ बीके कोमल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। स्वागत भाषण मीडिया विंग के राष्ट्रीय संयोजक बीके शांतानु ने दिया। स्वागत नृत्य बेंगलुरु से आए सुप्रीम शिव शक्ति सांस्कृतिक अकादमी के बच्चों ने पेश किया।

नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

जीवन है 'प्रभु प्रसाद'

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान। प्रसाद शब्द आते ही हमारा मन अगाध श्रद्धा, आस्था से भर जाता है। मन में एक सकारात्मक श्रद्धाभाव उत्पन्न हो जाता है। पवित्र प्रकंपन्न जागृत हो जाते हैं। 'प्रभु प्रसाद' का अर्थ होता है भगवान का आशीर्वाद या दान। जीवन को प्रभु प्रसाद के रूप में देखने से हमें एक नई दृष्टि मिलती है। यह दृष्टिकोण जीवन के प्रति आभार, समर्पण और सेवा का भाव विकसित करने में मदद करता है। जीवन के हर अनुभव को एक आशीर्वाद मानकर जीना न केवल हमें आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाता है, बल्कि संतोष और प्रसन्नता की ओर भी ले जाता है। जब यह सदा जागृत रहता है तो मन स्वतः ही भौतिकता से उपराम अवस्था की ओर बढ़ जाता है। दुनिया और सांसारिकता से ऊपर उठ जाता है। जीवन में आने वाली समस्याएं और परिस्थितियां नगण्य लगने लगती हैं। भौतिक उपलब्धि, मान-सम्मान के प्रति अनासक्त भाव हो जाता है।

यही भाव हमें जीवन में आध्यात्मिक गहराई में उतरने, अंतस के राज समझने, आत्म विश्लेषण करने की ओर अग्रसर करता है। भौतिकता में रमा मन, अनासक्त भाव के बिना आध्यात्मिक अनुभवों के सागर में गोता नहीं लगा सकता है। भौतिकता की चकाचौंध अध्यात्म के तल को भेदने ही नहीं देती है। इससे साधक उसकी थाह से वंचित रह जाता है।

ये सांसें प्रभु की अमानत हैं-

जीवन में जब यह भाव अंतर्मन की गहराई में समां जाता है कि ये सांसें प्रभु की अमानत हैं तो जीवन का एक-एक कर्म श्रेष्ठ, महान और उपयोगी बन जाता है। एक-एक सांस को सफल करने की चाह मन में सदा बनी रहती है। जब कोई वस्तु हमारे पास अमानत के रूप में रहती है तो हम उसकी विशेष देखभाल और संभाल करते हैं। इसी तरह इन सांसों को अमानत समझने से हमारा जीवन का प्रत्येक क्षण सफल और सुखद बन जाता है। हम जीवन को श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहते हैं। अपने समय, शक्ति, संकल्प और ऊर्जा को बचाते हैं और उसे प्रभु की सेवा में, ईश्वरीय सेवा में और विश्व कल्याण में लगाने की दिशा में स्वतः ही अग्रसर हो जाते हैं।

समर्पण और आभार-

समर्पण का भाव मन में वैराग्य के रूप में परिणीत हो जाता है। जब मेरा कुछ है ही नहीं तो गुमान किस बात का। यह भाव हमें दातापन और दिव्य गुण की अवस्था की ओर ले जाता है। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव जीवन में शांति, खुशी, शक्ति, आनंद के रूप में प्राप्त होता है। हमारी सफलता में हमारे प्रयासों के साथ परिवार, समाज, प्रकृति और सबसे अहम परम सत्ता का योगदान होता है, इसलिए सदा ईश्वर के प्रति सुंदर जीवन देने के लिए कृतज्ञता का भाव बना रहे। जहां समर्पण और आभार है वहां सफलता और प्रभु प्रेम है।

जीवन का सार प्रभु सेवा-

सेवा सौभाग्य की बात है और प्रभु सेवा में जीवन अर्पण कर देना, खुद को न्यौछावर कर देना परम सौभाग्य की बात है। जिनके आशीर्वाद से यह सांसें मिली हैं उनकी सेवा, ध्यान में इन सांसों को सफल कर देना जीवन का सबसे महान कार्य है। रोजाना के जीवन में जो व्यक्ति कुछ क्षण प्रभु सेवा में अर्पण करता है तो स्वतः ही उसका जीवन निर्विघ्न, निश्चिंत बन जाता है। परोपकार का भाव तभी परिलक्षित होता है जब जीवन में प्रभु के प्रति आभार, समर्पण का भाव हो। ऐसे में स्वतः ही परोपकारी कार्य होते हैं।

मन और विचारों की शुद्धता-

प्रभु पिता परमात्मा में रमा मन परमात्मा की दिव्य शक्ति, ऊर्जा से शुद्ध और पवित्र बन जाता है। उसके मन से कलुषित विचार, दूषित भावनाएं, नकारात्मक विचार सदा-सदा के लिए विदाई ले लेते हैं। ऐसे साधक के मन में सदा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना और सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय का भाव संस्कार के रूप में सदा-सदा के लिए निजी संपत्ति बन जाता है। मन और विचारों में संपूर्ण शुद्धता ही साधक के जीवन में आध्यात्मिक प्रकाश की गहराई को दर्शाती है। मन जिनता सरल, निर्मल, पावन होगा उसका अंतस उतना ही आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत होगा।

जीवन के प्रति संतोष और प्रसन्नता-

प्रभु प्रसाद के रूप में जीवन को स्वीकार करने का अंतिम परिणाम है संतोष और प्रसन्नता। जब हम जीवन के हर पल, हर अनुभव को प्रभु का प्रसाद मानते हैं, तो हमारे भीतर एक अद्भुत संतोष का भाव उत्पन्न होता है। हमें समझ में आता है कि जीवन में जो कुछ भी हो रहा है, वह हमारे लिए सबसे अच्छा है, क्योंकि वह ईश्वर की योजना का हिस्सा है। यह संतोष हमें हर स्थिति में खुशी और मानसिक शांति प्रदान करता है। चाहे जीवन में कैसी भी परिस्थितियां हों, यदि हम इसे प्रभु प्रसाद मानते हैं, तो हमारे अंदर से दुख, तनाव, और चिंता समाप्त हो जाती है, और हमें हर क्षण में एक गहरी प्रसन्नता का अनुभव होता है। परमात्मा का यही संदेश है कि आपको जीवन में जो गुण, विशेषता और कला मिली है वह हमारी नहीं उसकी अमानत है यह भाव लेकर जब कर्म करेंगे तो सफलता समाई हुई ही है।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज की टीवी आइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

रोज मन को चार्ज करना जरूरी

अपने संकल्पों को करते रहें चैक, क्योंकि...

संकल्प से बनती है सृष्टि

शिव आमंत्रण, आबू रोड। हमेशा अपनी कैपेसिटी बढ़ाते रहें। कोई भी चीज को यदि हम बढ़ाते नहीं हैं तो वह धीरे-धीरे घटने लगती है। इसी तरह चेक करते रहें कि मेरी सोच कैसी चल रही है। मेरा व्यवहार कैसा है, अभी वर्तमान स्थिति क्या है। चेक करें कि मैंने क्या सृष्टि को देख कर संकल्प किया। जीवन में एक छोटी सी प्रॉब्लम आती है और हम सोचना शुरू करते देते हैं कि बड़ी प्रॉब्लम है तो वह बड़ी हो जाएगी। जैसे कोई घर में बीमार है यदि सभी लोग बोलेंगे बीमार है, बीमार है तो वह और बीमार हो जाएगा। क्योंकि संकल्प से सृष्टि बनती है। तो चैक करें मेरी सृष्टि क्या है? मेरे रिश्ते, मेरी सृष्टि क्या है? मेरा काम और मेरी सृष्टि क्या है? जो सोचेंगे वह होता जाएगा। जैसे आप ऑफिस जा रहे हैं। रास्ते में ट्रैफिक है। बारिश भी हो रही है। ऐसे में मन में याल आएंगे कि आज फिर ऑफिस टाइम पर नहीं पहुंच पाऊंगा। आज फिर लेट हो जाऊंगा। संकल्प से सृष्टि बनती है तो आपके साथ वैसा ही होने लगेगा। इसकी जगह सोचें ट्रैफिक कम हो रहा है। जगह खाली है और मैं अपनी जगह पर पहुंच रहा हूं तो आप समय पर पहुंच जाएंगे। बीज गलत डालेंगे तो परिणाम भी गलत आएगा।

जिसे याद करेंगे वैसे ही वाइब्रेशन हमें मिलेंगे

ज्ञान सुनते हैं और मेडिटेशन करते हैं। परमात्मा का ज्ञान और परमात्मा से कनेक्शन जोड़कर मेडिटेशन जिसे हम याद करेंगे, उसके मन की स्थिति के साथ हमारी मन की स्थिति जुड़ जाएगी। अगर आपने यहां बैठे किसी को याद किया जो घर पर हैं। तो उनकी जो अभी मन की स्थिति होगी। उसका वाइब्रेशन आपके मन से कनेक्ट हो जाएगा। एनर्जी ट्रांसफर इसीलिए कभी-कभी बिना कोई कारण के दुख हो रहा है, बिना कोई कारण की चिंता हो रही है उस टाइम याद किसको कर रहे थे। जो यहां होगा मतलब उसके साथ मेरा कनेक्शन जुड़ गया। इसलिए बचपन से हमें सिखाया गया था सारा दिन किसको याद करो। क्योंकि अगर उसको याद करते रहोगे तो यहां कनेक्शन किसके साथ जुड़ा रहेगा। उसके साथ जुड़ा रहेगा। परेशान को याद करेंगे तो परेशान होंगे। नाराज को याद करेंगे तो नाराज होंगे। शांति के सागर को याद करेंगे, सर्वशक्तिमान को याद करेंगे तो वैसे बनते जाएंगे।

जो कर्म करें, मन भी उसमें लगा हो...

लोग परमात्मा को याद करने बैठते हैं लेकिन मन इधर-उधर भटक जाता है। जैसे मुझे अपना पूजा पाठ करना है, जाप करना मैंने सबकुछ किया। ईश्वर को फूल भी चढ़ाए, अगरबत्ती लगाई। लेकिन बीच-बीच में बच्चों के बारे में भी सोच लिया। ऑफिस जाकर आ गए। इसीलिए क्या हुआ इतना अच्छा विधिपूर्वक सबकुछ करते हुए भी चार्जिंग नहीं हुई। दूसरा तरीका यह है कि हम घर के काम करते, खाना बनाते, ऑफिस में काम करते, गाड़ी चलाते भी भगवान को मन से याद कर सकते हैं। क्योंकि हमारे मन की आवाज ही परमात्मा तक पहुंचती है। कर्मयोगी मतलब हम कर्म पर फोकस करते हैं। राजयोग में रहते हुए कर्म किया। जो कर्म परमात्मा की याद रखते हुए करेंगे ऑटोमेटिकली उनका हर कर्म कर्मयोग हो जाएगा। मेडिटेशन मतलब ध्यान रखना, मन का ध्यान रखने के लिए ध्यान करना होता है। तो परमात्मा को याद करने के लिए मेडिटेशन कहते हैं। मेडिटेशन मतलब सारा दिन परमात्मा से एक सुंदर रिश्ता, कनेक्शन।

समस्या आने पर सबसे पहले परमात्मा से समाधान पूछें

जब भी हमारे जीवन में कोई समस्या आती है तो हम पहले अपने साथी वालों से, परिवार के सदस्यों से पूछते हैं। सभी से पूछने के बाद जब कोई समाधान नहीं मिलता तो लास्ट ऑप्शन के तौर पर परमात्मा के पास जाते हैं। जबकि जीवन में कोई भी परेशानी या समस्या आए परमात्मा लास्ट ऑप्शन की जगह फर्स्ट ऑप्शन हो। सुख हो या दु:ख सभी में पहले परमात्मा के साथ शेयर करें। कोई भी काम करने से पहले, सुबह उठने के बाद, रात को सोते समय, खाना खाने से पहले, ऑफिस जाने से पहले परमात्मा को जरूर याद करें। सुबह का समय सात्विक होना चाहिए। सुबह पूरे दिन के लिए मन को चार्ज करना चाहिए।

सतयुग में जाने के लिए बनाने होंगे दिव्य संस्कार

जैसे सुबह के बाद दोपहर फिर शाम और रात आती है। फिर रात के बाद सुबह होती है। इसी तरह सृष्टि चक्र भी चलता है। सतयुग के बाद त्रेतायुग, द्वापरयुग और फिर कलियुग। वर्तमान समय पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है। इसके बाद फिर से सतयुग आएगा। तो सतयुग में जाने के लिए हमें कैसे संस्कार बनाना होंगे। जब हमारे यहां पर सतयुगी और दिव्य संस्कार होंगे तभी हम सतयुग में पहुंच पाएंगे। जैसी यहां हमारे कर्म होंगे वैसे ही हमें अगले जन्म में उसका फल मिलेगा। देने वाले दाता ही देवी-देवता बनते हैं, यहां सभी को प्यार दें, समान दें। वर्तमान समय नर से नारायण बनने का समय है। नर ऐसी करनी करे जो नारायण पद पाए और नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी बद पाए।

परमात्मा की याद में बनाया भोजन प्रसाद बन जाता है

यदि आप रांग वाइब्रेशन का खाना खा लो या रांग वाइब्रेशन का पानी पी लो तो उसका असर आत्मा की स्थिति पर हो जाता है। अगर आपके लिए किसी ने खाना बनाया जो बहुत परेशान है और आपको कोई चिंता नहीं आप सिर्फ खाना खा लो तो इसका असर आप पर भी होना निश्चित है। जो डरा हुआ है उसके हाथ का खाना खा लो तो किसी बात से आपको डर लगने लगेगा। इसलिए हमेशा परमात्मा को याद करते हुए ही खाना बनाएं और याद में ही खाना खाएं। यदि माताएं अच्छे विचार करते हुए, अच्छी भावना के साथ और परमात्मा को याद करते हुए भोजन बनाएंगी तो वह भोजन नहीं प्रसाद बन जाएगा। जिस घर में रोज प्रसाद बनेगा वह घर मंदिर बन जाएगा। कभी भी खाने की मेज पर घर की प्राब्लम डिस्कस नहीं करें। न ही परेशानी, दर्द और तकलीफ की बातें करें।

शुद्ध संकल्प लेकर ही सोएं

रात को सोने से पहले 10 मिनट परमात्मा को याद करें। उसका शुक्रिया अदा करें। इससे जहां नींद अच्छी आएगी वहीं सपने भी नहीं आएंगे। मन शांत होने से कम समय में ही नींद पूरी हो सकेगी। यदि हम मन डगमग वाइब्रेशन पर रखकर सो गए तो हमारी सुबह स्थिति भी वैसी ही रहेगी। इसके अलावा जब भी पानी पीएं तो कुछ सेकंड उस पानी के गिलास को हाथ में लेकर पवित्र और शुद्ध वाइब्रेशन दें। इससे आपका मन शांत रहेगा। साथ ही पानी के साथ वह शुद्ध वाइब्रेशन आपके थॉट्स को भी चैंज करेंगे। शरीर में कोई प्रॉब्लम है तो विचार करें मेरा शरीर निरोगी है। परफेक्ट है। यदि जीवन में कोई प्रॉब्लम है उसी मनोस्थिति में खाना खाया और रात को सोने से पहले वही संकल्प करते-करते सो गए। इससे सारी रात माइंड उसी संकल्प को दोहराता रहेगा। रात को सोने से पहले कभी गलत नहीं सोचना, कभी उदास नहीं होना क्योंकि सारी रात में वह प्रॉब्लम रहती है। यही बात रिश्तों में लागू होती है। यदि आपके परिवार में रिश्तों में कड़वाहट है, दूरियां हैं तो मन में विचार करें कि मुझे सभी बहुत प्यार करते हैं, सभी परिवार के सदस्य मेरे सहयोगी और स्नेही हैं। सभी का आपस में प्रेम है। ये वाइब्रेशन धीरे-धीरे सामने वाले के पास पहुंचेंगे और आपके रिश्तों में सुधार आना शुरू हो जाएगा। संकल्प करें घर में सभी महान आत्माएं हैं, सभी देव आत्माएं हैं, सभी देवकुल की आत्माएं हैं। जब हमारे संकल्प शुद्ध व पवित्र होंगे तो हमारे आसपास की सृष्टि भी वैसी ही बन जाएगी।

सभी के लिए जानना जरूरी...

- हमारी हर थॉट्स (विचार) वायुमंडल में जा रही है, वैसी ही सृष्टि बन रही है। उसका असर औरों के ऊपर पड़ रहा है। वह कर्म वैसे कर रहे हैं। यदि हमने विचार को ठीक कर लिया तो बाहर सबकुछ अपने आप ठीक होना शुरू हो जाएगा। इसके लिए जरूरी है कि हम अपने संकल्प को रोज श्रेष्ठ बनाएं। सुबह उठते ही यदि मन और बुद्धि को ज्ञान की अच्छी बातें दे दी जाएं तो वह ज्ञान सारा दिन काम करेगा।
- यदि हमने आत्मा के दाग को ठीक नहीं किया तो वह दाग हमारे साथ अगले शरीर में भी जाने वाला है। जैसे घर को रोज साफ करते हैं वैसे ही रोज हमें अपनी खराब आदतों की सफाई करनी है। जो चीज हम बाहर करते हैं वह चीज हमें अपने विचार के स्तर पर करना है।
- माता-पिता और बच्चे के रिश्ते के बीच बहुत प्यार, रिस्पेक्ट, भावना चाहिए। आपके आसपास में किसी को गुस्सा है। कोई गलत संस्कार है तो उसे ब्लैसिंग दें। ताकि वह अपने उस संस्कार से बाहर निकल सके। अगर मन में कोई विचार है, कोई समस्या है तो उसे परमात्मा को सुना दें आपको अपने आप जवाब मिल जाएगा।

उत्कृष्ट मानवीय सेवा सम्मान से नवाजा

शिव आमंत्रण, स्विट्जरलैंड। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के यूरोपीय पहल के प्रमुख विल्हेम जेज़लर और पूनम जेज़लर ने स्विट्जरलैंड ज्यूरिख में शांति दूत डॉ. बीके बिन्नी को एक्सक्लूसिव वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से सम्मानित किया। साथ में हैं बीके राकेश भाई।

ब्रह्माकुमारीज़ ग्रुप की प्रस्तुति

शिव आमंत्रण, गुआंगजौ, चीन। ब्रह्माकुमारीज़ ने गुआंगज़ौ स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास में गांधी जयंती समारोह में भाग लिया। भारतीय वाणिज्य दूतावास ने गांधी जयंती पर एक कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ डायमंड कल्चर ग्रुप को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। बीके बहनों ने भक्ति नृत्य और गीत प्रस्तुत किए। बीके सपना दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई। साथ ही राजयोग के बारे में बताया। इस मौके पर भारत के महावाणिज्य दूत शंभू एल. हक्की ने समाज में शांति, प्रेम और सद्भाव फैलाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के प्रयासों की सराहना की।

दूतावास ने किया बीके जानकी का सम्मान

शिव आमंत्रण, बाली, इंडोनेशिया। डेनपसार में भारतीय वाणिज्य दूतावास ने विश्व हिंदी दिवस मनाया। ब्रह्माकुमारीज ने भी इस समारोह में हिस्सा लिया। हिंदी भाषा सीखने के महत्व पर भाषण, गीत और नृत्य हुए। भारत के महावाणिज्य दूत डॉ. शशांक विक्रम ने हिंदी भाषा के बढ़ते महत्व पर बात की। स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक नवीन भाई ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में 100 से अधिक लोग शामिल हुए। बीके जानकी दीदी को भारतीय वाणिज्य दूतावास की ओर से पुरस्कार प्रदान किया गया।

तेलंगाना में बाढ़ पीड़ितों को बांटी सामग्री

शिव आमंत्रण, खम्मम, तेलंगाना। क्षेत्र में भारी बारिश से लोगों को जान-माल की भारी हानि हुई है। हजारों लोगों की गृहस्थी उजड़ गई। खाद्य सामग्री बाढ़ में बह गई। इसे देखते हुए ब्रह्माकुमारी बहनों ने बाढ़ प्रभावितों की मदद के हाथ बढ़ाए और क्षेत्र में राशन सामग्री वितरित की। खम्मम सेवा केन्द्र की प्रभारी बीके अरुणा दीदी ने बताया कि बाढ़ पीड़ितों के लिए दस क्विंटल चावल, तीन क्विंटल दाल, सौ लीटर तेल, दस क्विंटल साडिया, 500 बच्चों के ड्रेस, 300 बर्तन और 500 प्लास्टिक बाल्टी आदि सामान पीड़ितों के लिए वितरित किया।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Oct. 2024
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संपादकः बीके कोमल » संयुक्त संपादकः बीके पुष्पेन्द्र